

8832

तलरविद्या

साहिर लुधियानवी



राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली ६

दो शब्द

उदू मे तो खैर, 'साहिर' लुधियानवी का बडा नाम है । उनके कविता संग्रह 'तलिखया'^१ के बीस-एक सस्करण छप चुके हैं और वे नई पीढी के उदू शायरो मे सब से लोकप्रिय शायर समझे जाते है अब हिन्दी मे भी वे किमी परिचय के मोहताज नही रहे^२ । लेकिन प्रत्येक पुस्तक की प्रस्तावना लिखनी या लिखवानी एक परम्परा-सी बन चुकी है और हमारा देश अन्ध्नी बुरी समस्त परम्पराओ के कडे पालन का अभ्यस्त हो चुका है, अतएव इन दो शब्दो द्वारा मैं केवल यह परम्परा ही पूरी कर रहा हूँ ।

'साहिर' की शायरी और उनके व्यक्तित्व के बारे मे, जैसा कि मैं कह चुका हू, मे बहुत कुछ लिख चुका हू । फिर मैने सोचा कि अपनी ओर से कुछ लिखने की बजाय मे उदू के उन समालोचको की रायें यहां अंकित कर दू जो अब तक 'साहिर' और उनकी शायरी के बारे मे छप चुकी हैं । लेकिन फिर यह सोचकर मैने यह विचार भी छोड दिया कि जो पाठक 'साहिर' को नही जानते वे उन

१ जिसका हिन्दी रूप आपके हाथो मे है । २ इससे पूव 'उदू के लोक-प्रिय शायर' नामक पुस्तक माला मे मैं उनकी रचनाओ का चयन, प्रस्तावना के रूप मे उनका जीवन-चरित्र, और उनकी शायरी पर विस्तार से समालोचना कर चुका हू । और अभी हाल मे उनके फिल्मी गीतों की एक पुस्तक 'गाता जाए बजारा' भी छपी है ।

सूची

१	रहे भ्रमल	१२
२	एक मञ्जर	१३
३	एक वाक्या	१४
४	यकसूई	१५
५	शहवार	१६
६	गज न	१७
७	नज्जे कालेज	१८
८	गजल	२०
९	माअजूरी	२१
१०	खाना आबागी	२३
११	सरजमीने यास	२४
१२	गज न	२७
१३	शिवस्त	२८
१४	गजल	३०
१५	किसीको उदास देखकर	३१
१	मेरे गीत	३४
१७	अदाआर	३६
१८	एक शाम	३७
१९	सोचता हूँ	३८
२०	नाकामी	४०

५२	ये किसका लहू है	६३
५३	मफाहमत	६५
५४	आज	६६
५५	गजल	६६
५६	नया सफर है पुराने चिराग गुल कर दो	१००
५७	शिकस्ते जिंदा	१०२
५८	लहू नजू दे रही है हयात	१०४
५९	आवाजे आदम	१०६
६०	गजल	१०७
६१	मताअ ए गर	१०८
६२	तेरी अ,वाज	११०
६३	गजल	११२
६४	वफागारी	११३
६५	अजनबी बन जाएं	११४
६६	मेरे अहल के हसीनो ।	११५
६७	परछाइया	११७

५२	ये किसका लहू है	६३
५३	मफाहमत	६५
५४	आज	६६
५५	गजल	६९
५६	नया सफर है पुराने चिराग गुल कर दो	१००
५७	शिकस्ते जिंदा	१०२
५८	लहू नज दे रही है हयात	१०४
५९	आवाजे आदम	१०६
६०	गजल	१०७
६१	मताअ ए-गंर	१०८
६२	तेरी आवाज	११०
६३	गजल	११२
६४	वफादारी	११३
६५	अजनबी बन जाएँ	११४
६६	मेरे अहद के हसीनो !	११५
६७	परछाइया	११७

दुनिया ने तजुर्नात-ओ-हवादिस¹ की शबल में
जो कुल्ल मुझे दिया है वो लौटा रहा ह में

रद्दे अमल^१

चन्द कलिया निशात की^२ चुनकर
मुद्दतो महवे - याम^३ रहता हू
तेरा मिलना खुशी की बात सही
तुझ से मिलकर उदाम रहता हू

एक मन्जर^१

उफक के^२ दरीचे से किरनो ने भाका
फजा^३ तन गई, रास्ते मुस्कुराये

सिमटने लगी नर्म कुहरे की चादर
जवा शाखसारो ने^४ धूघट उठाये

परिन्दो की आवाज से खेत चौके
पुरअसरार^५ लै मे रहट गुतगुनाये

हसी शवनम - आलूद^६ पगडडियो से
लिपटने लगे सव्ज पेडो के साथे

वो दूर एक टीले पे आचल सा भलका
तसव्वुर म^७ लान्वो दिये भिलमिलाये



१ दृश्य २ क्षितिज के ३ वातावरण ४ जवान शाखाओं ने
५ रहस्यपूर्ण ६ ओस भरी ७ कल्पना में

एक वाक्या^१

अधियारी रात के आगन मे ये सुबह के कदमो की आहट
ये भीगी-भीगी सद हवा, ये हल्को-हल्की बुदलाहट

गाडी मे हू तनहा^२ महवे-मफर^३ और नीद नही है आखो मे
भूले - विसरे रुमानो के रनावो की जमी है आखो मे

अगले दिन हाथ हिलाते हैं, पिछली पीतें याद आती है
गुमगस्ता^४ खुशिया आखो मे आसू बनकर लहराती है

सीने के वीरा गोशो मे^५ इक टीस-नी करवट लेती है
नाकाम उमगें रोती है उम्मीद सहारे देती है

वो राह जहन म^६ घूमती ह जिन राहो से आज आया हू
कितनी उम्मीद से पहुचा था, कितनी मायूसी लाया हू



१ घटना २ घबेला ३ यात्रा-भग्न ४ सोई हुई ५ वीरान कोन,
मे ६ मस्तिष्क म

यकसूई

अहदे-गुमगस्ता की^१ तसवीर दिखाती क्यो हो ?

एक आवारा-ए-मजिल को^२ सताती क्यो हो ?
वो हसी अहद^३ जो शमिदा-ए-ईफा न हुआ^४ ,

उम हसी अहद का मफहूम जताती क्यो हो ?
जिन्दगी शो'ला-ए-बेबाक^५ बना लो अपनी,

खुद को खाकस्तरे खामोश^६ बनाती क्यो हो ?
मे तसव्वुफ के^७ मराहिल का^८ नही हू कायल^९ ,

मेरी तसवीर पे तुम फूल चढाती क्यो हो ?
कौन कहता है कि आहे है मसाइब का^{१०} इलाज,

जान को अपनी अबस^{११} रोग लगाती क्यो हो ?
एक सरकश से^{१२} मोहब्बत की तमन्ना रखकर,

खुद को आईन के^{१३} फदे मे फमाती क्या हो ?
मे समझता हू तक्द्दुम^{१४} को तमद्दुन^{१५} का फरेद,

तुम रसूमात को^{१६} ईमान बनाती क्यो हो ?
जब तुम्हे मुझ से जियादा है जमाने का खयाल,

फिर मेरी याद मे यू अरक^{१७} बहाती क्यो हो ?
तुम भ हिम्मत है तो दुनिया से बगावत कर दो ।

वर्ना मा-बाप जहा कहते हैं शादी कर लो ॥

१ खोए हुए (बीते) दिनों की २ जिसकी कोई मजिल न हो ३ प्रण
४ जो पूरा न हुआ ५ घृष्ट शोला ६ मोन राख ७ सूफीवाद के
= सीढियों का ८ अनुयायी १० विपदाभो का ११ व्यथ १२ उद्दण्ड
१३ कानून के १४ पवित्रता १५ सश्रुति १६ रीति रिवाजो की
१७ आसू

शहकार^१

मुसव्विर^२ ! मैं तेरा शहकार वापस करने आया हूँ ।

अब इन रगीन रुखसारो मे^३ थोड़ी जर्दिया भर दे,
हिजाब-आलूद^४ नजरो मे जरा बेवाकिया भर दे ।

लबो की^५ भीगी-भीगी सल्वटो को मुजमहिल^६ कर दे,
नुमाया रंगे पेशानी पे^७ अक्से-सोजे दिल^८ कर दे ।

तबस्मुम-आफरी^९ चेहरे मे कुछ सजीदापन भर दे,
जवा सीने की मखरूती^{१०} उठानें सरनिगू^{११} कर दे ।

घने वालो को कम कर दे मगर रखशदगी^{१२} दे दे,
नज़र से तम्बनत^{१३} लेकर मजाके-आजिजी^{१४} दे दे ।

मगर हा, बच के बदले इसे सोफे पे बिठला दे,
यहा मेरी बजाए इक चमकती कार दिखला दे ।

१ महान कलाकृति २ चित्रकार ३ गाला मे ४ सज्जाशील
५ होटो की ६ व्याकुल ७ माये के रंग पर ८ हृदय की जलन
का प्रतिविम्ब ९ मुस्कराते १० गोल और नुकीली ११ झुकी हुई
१२ चमक १३ अभिमान १४ विनयशीलता

गजल

मोहव्यत तर्क की मैने, गिरेगा सी लिया मैने
जमाने ! अब तो खुश हो, ज़हर ये भी पी लिया मैने

अभी जिन्दा हू लेकिन सोचता रहता हू खलवत मे'
कि अब तक किस तमन्ना के सहारे जी लिया मैने

उन्हे अपना नहीं सकता मगर इतना भी क्या कम है
कि कुछ मुद्त हसी रवाबो म खोकर जी लिया मैने

बस अब तो दामने-दिल छोड दो बेकार उम्मीदो
बहुत दुख सह लिये मैने, बहुत दिन जी लिया मैने



नज़्द-कालेज^१

ऐ सरजमीने-पाक के^२ याराने-नेवनाम^३ ।
 वा-सद-खुलूस^४ शायरे-आवारा वा सलाम ।
 ऐ वादि-ए-जमोल^५ । मेरे दिल की घड़कनें,
 आदाव कह रही हैं तेरी वारगाह मे^६ ।
 तू आज भी है मेरे लिए जनते खयाल^७,
 हैं तुझ में दफन मेरी जवानी के चार साल ।
 कुम्हताये हैं यहा पे मेरी जिन्दगी के फूल,
 इन रास्तो में दफन हैं मेरी खुशी के फूल ।
 तेरी नवाजिशो को भुलाया न जायेगा,
 माजी का नकश^८ दिल से मिटाया न जायेगा ।
 तेरी निशातखेज^९ फजा-ए-जवा की^{१०} खँर,
 गुलहाए-रगो बू के^{११} हसी कारवा की खँर ।
 दौरे-खिजा मे^{१२} भी तेरी कलिया खिली रहे,
 ताह्थ^{१३} ये हसीन फजाय बसी रह ।
 हम एक खार^{१४} थे जो चमन से निकल गये,
 नगे - वतन^{१५} थे हद्दे वतन से निकल गये ।

१ कालेज की भेंट २ पवित्र भूमि के ३ यशस्वी मित्रो । ४ सकडो (बडी) शुद्धहृदयता के साथ ५ सु दर घाटी ६ सभा-स्थल मे ७ खयालो की जघनत ८ चित्र ९ आनन्द-दायक १० जवान वातावरण की ११ सुगन्धित फूलों के १२ पतझड की ऋतु मे १३ प्रलय तक १४ वाटा १५ देश के लिए लज्जा की वस्तु

गाये हैं इस फज्जा मे वफाओ के राग भी,
 नग्माते-आतशी से बटेरी है आग भी ।
 सरकश^१ बने हैं, गीत बगावत के गाये है,
 बरसो नये निजाम के^२ नक्शे बनाये हैं ।
 नग्मा निशाते-रह का^३ गाया है वारहा^४,
 गीतो मे आसुओ को छुपाया है वारहा ।
 मासूमियो के जुर्म मे बदनाम भी हुए,
 तेरे तुफूल^५ मूरिदे-इल्जाम^६ भी हुए ।
 इस सरजमी पे आज हम इक वार^७ ही सही,
 दुनिया हमारे नाम से बेजार ही सही ।
 लेकिन हम इन फज्जाओ के पाले हुए तो हैं,
 गर याँ^८ नहीं तो याँ से निकाले हुए तो है ।

(सुध्याना गवनमेंट कालेज—१९४३)



जिंदगी को बेनियाजे-आरजू करना पडा
 आहू किन आखो से अजामे-तमन्ना देखते

१ उद्द २ व्यवस्था के ३ मा-तरिक आनन्द का गीत ४ बार-बार
 ५ कारण ६ दोष के भागी ७ बोझ ८ यहाँ

गजल

देखा तो था यूँही किसी गफलत-गभ्रार ने^१
 दीवाना कर दिया दिले - बेइख्तियार ने

ऐ आरजू के धुदले सराबो^२ । जवाब दो
 फिर किस की याद आई थी मुझको पुकारने

तुझ को खबर नहीं मगर इक सादालीह^३ को
 बर्बाद कर दिया तेरे दो दिन के प्यार ने

मैं और तुम से तर्के-मोहब्बत की^४ आरजू
 दीवाना कर दिया है गमे-रोज़गार ने^५

अब ऐ दिले-तवाह^६ ! तेरा क्या खयाल है
 हम तो चले थे काकुले - गेती^६ सवारने



१ सापरवाही जिसका स्वभाव हो २ सडहरो ३ सरल स्वभाव वाले
 ४ प्रेम का त्यागने की ५ सांसारिक दुगो ने ६ सतार रूपी वेग

माअजूरी^१

खलवत-ओ-जलवत मे^२ तुम मुझसे मिली हो बारहा,
तुम ने क्या देखा नहीं, मैं मुस्करा सकता नहीं ।

मैं कि मायूसी मेरी फितरत मे^३ दाखिल हो चुकी,
जब्र भी खुद पर करूँ तो गुनगुना सकता नहीं ।

मुझ में क्या देखा कि तुम उल्फत का दम भरने लगी,
मैं तो खुद अपन भी कोई काम आ सकता नहीं ।

रूह - अफजा^४ है जुनूने - इश्क के^५ नग्मे मगर,
अब मैं इन गाये हुए गीतों को गा सकता नहीं ।

मैंने देखा है शिकस्ते - साजे - उल्फत का^६ समा,
अब किसी तहरीक^७ पर वरवत^८ उठा सकता नहीं ।

दिल तुम्हारी शिद्दते - एहसास से^९ वाकिफ तो है,
अपने एहसासात से दामन छुड़ा सकता नहीं ।

तुम मेरी होकर भी बेगाना ही पाओगो मुझे ।
मैं तुम्हारा होके भी तुम में समा सकता नहीं ।

१ विवशता २ एकांत में और सब के सामने ३ स्वभाव में
४ प्राण-वधा ५ प्रेमो-माद ६ प्रेम रूपी बाजे ७ दूटना ८ प्रेरणा
९ साज १० अनुभूति की तीव्रता से

गाये हैं मैंने खुल्लूसे-दिल से^१ भी उल्फत के गीत,
अब रियाकारी से^२ भी चाह तो गा सकता नहीं ।

किस तरह तुमको बना लूं मैं शरीके-जिन्दगी^३ ?
मैं तो अपनी जिन्दगी का वार^४ उठा सकता नहीं ।

यास की^५ तारीकियो मे^६ डूब जाने दो मुझे,
अब मैं शम्मन्न-ए-थारजू की^७ लौ बढा सकता नहीं ।



१ शुद्धहृदयता से २ पाखंड से ३ जीवन-साथी ४ बोझ
५ निराशा की ६ अपकार में ७ आकाशा-रूपी दीपन

खाना-आवादी

(एक दोस्त की शादी पर)

तराने गूँज उट्ठे है फजा मे शादियानो के,
हवा है इत्र-आगी^१, जर्न-जर्न मुस्कुराता है ।

मगर दूर, एक अफसुर्दा^२ मका मे सर्द विस्तर पर,
कोई दिल है कि हर आहट पे यूही चौक जाता है ।

मेरी आँखो मे आँसू आ गये 'नादीदा आँखो' के^३,
मेरे दिल मे कोई गमगीन नर्मी सरसराता है ।

ये रस्मे-इन्कित्ता-ए-अहदे-उल्फत^४, ये हयाते-नी^५,
मोहब्बत रो रही है और तमद्दुन^६ मुस्कुराता है ।

ये शादी खाना आवादी हो, मेरे मोहतरिम^७ भाई,
भुवारिक कह नही सकता, मेरा दिल काप जाता है ।

१ सुगंधित २ उदास ३ अनदेखी आँखो के ४ प्रेम-काल की समाप्ति की रीति ५ नव जीवन ६ ससृति ७ आदरणीय

सरजमीने-यास^१

जोने से दिल बेजार है,
 हर सास एक आजार^२ है ।
 कितनी हजी^३ है जिन्दगी ।
 अदोहगी^४ है जिन्दगी ।
 वो वरमे-अहवावे - वतन^५ ,
 वो हमनवायाने - सुखन^६ ।
 आते हैं जिस दम थाद अब,
 करते हैं दिल नाशाद^७ अब ।
 गुजरी हुई रगिनिया,
 खोई हुई दिलचस्पिया ।
 पहरो रलाती है मुझे,
 अकसर सताती हैं मुझे ।
 वो जमजमे^८ , वो चहचहे,
 वो रुह-अफजा^९ कहकहे ।
 जब दिल को मौत आई न थी,
 यूँ बेहिसी^{१०} छाई न थी ।
 वो नाजानीनाने - वतन^{११} ,
 जोहरा - जवीनाने वतन^{१२} ।
 जिन मे से एक रगी-कबा^{१३} ,
 आतिश-नफम^{१४} आतिश-नवा^{१५} ।

१ निराशाओं की भूमि २ कष्ट ३ शोकाकुल ४ शोक ग्रस्त
 ५ स्वदेशीय मित्रों की महफिल ६ सहवाणी (मित्र) ७ दुखी ८ गान
 ९ प्राण बद्धक १० स्पन्दनहीनता ११ १२ देश की सुन्दरिया १३ रगीन
 वस्त्रों वाली सुन्दरी १४ जवाला मय श्वासों वाली १५ अग्नि भाषी

करके मोहव्यत - आशाना^१ ,
 रगे - अकीदत - आशाना^२ ।
 मेरे दिले - नाकाम को,
 खूँ-गश्ता-ए-आलाम को^३ ।
 दागे - जुदाई दे गई,
 सारी खुदाई ले गई
 उन साअतो की^४ याद मे,
 उन राहतो की^५ याद मे ।
 मग्मूम - सा रहता हू मैं,
 गम की कसक सहता हू मै ।
 सुनता हू जब अहवाव से^६ ,
 किस्से गमे - अय्याम के^७ ।
 बेताव हो जाता हू मै,
 आहो मे खो जाता हू मै ।
 फिर वो अजीज-ओ-अकूबा^८ ,
 जो तोड कर अहदे - वफा^९ ।
 अहवाव से मुँह मोड कर,
 दुनिया से रिश्ता तोड कर ।
 हद्दे - उफक से^{१०} उस तरफ,
 रगे-शफक से^{११} उस तरफ ।
 इक वादी-ए खामोश^{१२} की,
 इक आलमे - बेहोश की^{१३} ।
 गहराश्यो म सो गये,
 तारीकियो म^{१४} खो गये ।

१ प्रेम से परिचित २ अद्धा के रग से परिचित ३ दुखो का मारर हुआ
 ४ क्षणो की ५ मुखा की ६ मित्रो से ७ दिनों के (सासारिक) दुखो के
 ८ मित्र ९ प्रेम निभान की प्रतिज्ञा १० क्षितिज की सीमा से ११ ऊप्रा
 के रग से १२ निस्तब्ध घाटी १३ बेहोशी की हालत की १४ अघकार म

उन का तसब्बुर नागहा,
 लेता है दिल में चुटकिया ।
 और खूँ रुलाता है मुझे
 बेकल बनाता है मुझे ।
 वो गाव की हमजोलिया,
 मफनूक^१ दहकाँ-जादिया^२ ।
 जो दस्ते - फर्ते - यास से^३,
 और यूरिशे - इफलास से^४ ।
 इस्मत लुटाकर रह गई,
 खुद को गवा कर रह गई ।
 गमगी जवानी बन गई,
 रुसवा^५ कहानी बन गई ।
 उनसे कभी गलियों में अब,
 होता हूँ मैं दोचार जब ।
 नज़रे भुका लेता हूँ मैं,
 खुद को छुपा लेता हूँ मैं ।
 कितनी हज़ी है जिन्दगी ।
 अन्दोहगी है जिन्दगी ॥

१ निघन २ किसानों की बेटिया ३ निरागा की अधिकता (के हाथ) से
 ४ निघनता के आशमण (अधिकता) से ५ बदनाम

गजल

खुदा रियो के खून को अर्जा^१ न कर सके
हम अपने जीहरो को^२ नुमाया न कर सके

होकर खराबे - मै^३ तेरे गम तो भुला दिये
लेकिन गमे - हयात का दरमा^४ न कर सके

दूटा तलिस्मे-अहदे-मोहब्बत^५ कुछ इस तरह
फिर आरजू की शम्मअ फरोजा^६ न कर सके

हर शै करीब आके कशिश^७ अपनी खो गई
वो भी इलाजे - शौके - गुरेजा^८ न कर सके

किस दर्जा दिलशिकन^९ थे मोहब्बत के हादसे
हम जिन्दगी मे फिर कोई अरमां न कर सके

मायूसियो ने छीन लिये दिल के बलबले
वो भी निशाते - रूह का^{१०} सामां न कर सके

१ सस्ता २ गुणो को ३ शराब के हापो खराब होकर ४ जीवन की चिन्ताभो का इलाज ५ प्रेम-काल का जादू ६ प्रकाशमान ७ आकपण ८ विमुख प्रेम का इलाज ९ हृदय भजव १० आत्मा का सृष्टि या हृप का

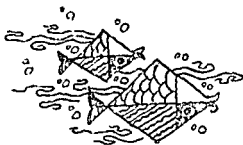
राजल

हवस - नसीब^१ नजर को कही करार^२ नहीं
 मे मुन्तजिर हू मगर तेरा इन्तज़ार नहीं
 हमी से रगे - गुलिस्ता हमी से रगे-बहार
 हमी को नज़्मे - गुलिस्ता पे^३ इस्तिनयार नहीं
 अभी न छेड़ मोहब्बत के गीत ऐ मुतरिव^४
 अभी हयात का^५ माहील^६ खुशगवार नहीं
 तुम्हारे अहदे-वफा को^७ मे अहद क्या समभू
 मुझे खुद अपनी मोहब्बत का एतबार नहीं
 न जाने कितने गिले^८ इममे मुजतरिव^९ है नदीम^{१०}
 वो एक दिल जो किसी का गिला-गुज़ार^{११} नहीं
 गुरेज़ का नहीं कायल हयात से^{१२}, लेकिन
 जो सच कह तो मुझे मौत नागवार^{१३} नहीं
 ये किस मुकाम पे पहुँचा दिया जमाने ने
 कि अब हयात पे तेरा भी इरितयार नहीं

१ लोभुपता प्रिय २ र्चन ३ उद्यान की व्यवस्था पर ४ गायक
 जीवन का ५ वातावरण ६ वफादार रहने की प्रतिज्ञा को ७ शिकायतें
 आकुल १० साथी ११ जो किसी की शिकायत न करता हो १२ जीवन
 भागने के पक्ष में नहीं हूँ १३ अप्रिय

रेगजारो मे^१ वगूलो के सिवा कुछ भी नहीं,
साया-ए-अब्रे - गुरेजा से^२ मुझे क्या लेना ?
बुझ चुके हैं मेरे सीने में मोहव्यत के कवल,
अब तेरे हृस्ने - पशेमा से^३ मुझे क्या लेना ॥

तेरे आरिज पे ये ढलके हुए सीमी^४ आसू,
मेरी अफसुदंगी-ए-गम का^५ मुदावा^६ तो नहीं ।
तेरी महजून निगाहो का^७ पयाभे - तजदीद^८ ,
इक तलाफी^९ ही सही, मेरी तमन्ना तो नहीं ॥



१ मरुस्थली मे २ भागते हुए बादल की छाया से ३ लज्जित सौंदर्य से
४ रजत ५ गम की उदासी का ६ इलाज ७ लज्जित नखरों का
८ नवीकरण का संदेश ९ क्षतिपूर्ति

शिकस्त

अपने सीने से लगाए हुए उम्मीद की लाश,
मुद्दतो जीस्त को^१ नाशाद^२ किया है मैंने ।

तूने तो एक ही मदमे से किया था दोचार,
दिल को हर तरह से वर्वाद किया है मैंने ।
जब भी राहों मे नजर आए हरीरी मलबूस^३,
मद आहो मे तुझे याद किया है मैंने ॥

और अब जबकि मेरी रूह की पहनाई मे^४,
एक सुनसान-मी मग्मूम^५ घटा छाई है ।
तू दमक्ते हुए आरिज की^६ शुआएँ^७ लेकर,
गुलशुदा^८ शम्मएँ जलाने को चली आई है ॥

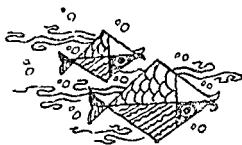
मेरी महबूब ये हगामा - ए - तजदीदे - वफा^९ ,
मेरी अफसुर्दा^{१०} जवानी के लिए रास नहीं ।
मैने जा फूल चुने थे तेरे वदमो के लिए,
उनका धुदला-सा तसब्बुर^{११} भी मेरे पास नहीं ॥

एक यखवस्ता^{१२} उदासी है दिलो-जा पे मुहीत^{१३},
अब मेरी रूह मे वाकी है न उम्मीद न जोश ।
रह गया दब के गिरावार सलासिल के^{१४} तले,
मेरी दरमादा^{१५} जवानी की उमगो वा खरोश^{१६} ॥

१ जीवन को २ दिन ३ रेसमी लिबास ४ आत्मा की विस्तीर्णता म
५ दुखी ६ गालो की ७ रश्मिया ८ बुझी हुई ९ प्रेम के नवीकरण
का हगामा १० उदास, बुझी हुई ११ कल्पना १२ वफ की तरह जमी हुई
१३ छाई हुई १४ बोझन जजोरों का १५ दुखी १६ जोग

रेगजारो म^१ बगूलो के सिवा कुछ भी नहीं,
साया-ए-अत्रे - गुरेजा से^२ मुझे क्या लेना ?
बुझ चुके हैं मेरे सीने म मोहव्रत के कवल,
अब तेरे हस्ते - परोमा से^३ मुझे क्या लेना ॥

तेरे आरिज पे ये ढलके हुए सीमी^४ आसू,
मेरी अफसुर्दगी-ए-गम का^५ मुदावा^६ तो नहीं ।
तेरी महजूर गिगाहो का^७ पयामे - तजदीद^८ ,
इक तलाफी^९ ही सही, मेरी तमन्ना तो नहीं ॥



१ महस्थलो म २ भागते हुए बादल की छाया से ३ लज्जित सौंदर्य से
४ रजत ५ गम की उदासी का ६ इलाज ७ लज्जित नजरों का
८ नवीकरण का संदेश ९ क्षतिपूर्ति

गञ्जल

हवस - नसीब^१ नजर को कही करार^२ नहीं
में मुन्तज़िर हू मगर तेरा इन्तज़ार नहीं

हमी से रगे - गुलिस्ताँ हमी से रगे-बहार
हमी को नरमे - गुलिस्ता पे^३ इस्तियार नहीं

अभी न छेड मोहब्बत के गीत ऐ मुतरिव^४
अभो हयात का^५ माहौल^६ खुशगवार नहीं

तुम्हारे अहदे-वफा को^७ मैं अहद क्या समझू
मुझे खुद अपनी मोहब्बत का एतवार नहीं

न जाने कितने गिले^८ इसमे मुजतरिव^९ हैं नदीम^{१०}
वो एक दिल जो किसी का गिला-गुज़ार^{११} नहीं

गुरेज का नहीं कायल हयात से^{१२}, लेकिन
जो मच कहू तो मुझे मौत नागवार^{१३} नहीं

ये किस मुकाम पे पहुँचा दिया जमाने ने
कि अब हयात पे तेरा भी इत्तियार नहीं

१ लोलुपता प्रिय २ चन ३ उद्यान की व्यवस्था पर ४ गायक
५ जीवन का ६ वातावरण ७ वफादार रहने की प्रतिज्ञा को ८ शिकायतें
९ आकुल १० साथी ११ जो किसी की शिकायत न करता हो १२ जीवन
से भागने के पक्ष में नहीं हूँ १३ अप्रिय

किसी को उदास देखकर ।

तुम्हे उदास सी पाता हू मैं कई दिन से,
न जाने कौन से सदमे उठा रही हो तुम ?
वो शोखिया वो तबस्सुम, वो कहकहे न रहे,
हर एक चीज को हसरत से देखती हो तुम ।
छुपा - छुपा के खमोशी में अपनी बेचैनी,
खुद अपने राज की तशहीर^१ घन गई हो तुम ।

मेरी उमीद अगर मिट गई तो मिटने दो,
उमीद क्या है बस इक पेशो-पस^२ है कुछ भी नहीं ।
मेरी ह्यात की गमगीनियों का गम न करो,
गमे ह्यात^३ गमे यक-नफस^४ है कुछ भी नहीं ।
तुम अपने हुस्न की रअनाइयो पे^५ रहम करो,
वफा फरेव है, तूले-हवस^६ है, कुछ भी नहीं ।

मुझे तुम्हारे तगाफुल से^७ क्यों शिकायत हो,
मेरी फना^८ मेरे एहसास का^९ तकाजा है ।
मैं जानता हू कि दुनिया का खौफ है तुमको,
मुझे खबर है, ये दुनिया अजीब दुनिया है ।
यहाँ ह्यात के पर्दे में मौत पलती है,
शिकस्ते - साज की^{१०} आवाज रहे - नग्मा है ।

१ विनापन २ दुविधा ३ जीवन का गम ४ क्षण भर का गम
(एक श्वास से सम्बन्धित) ५ रमणीयताओं पर ६ लोलुपता की दीधता
७ उपेक्षा से ८ मृत्यु ९ चेतना का १० साज के टूटने की

मुझे तुम्हारी जुदाई का कोई रज नहीं,
मेरे सयाल की दुनिया में मेरे पास हो तुम ।
ये तुमने ठीक कहा है, तुम्हें मिला न करू,
मगर मुझे ये बता दो कि क्यों उदास हो तुम ?
खफा न होना मेरी जुर्रते - तख़ातुब पर^१,
तुम्हें खबर है मेरी जिन्दगी की आन हो तुम ।

मैं अपनी रूह की हर इक खुशी मिटा लूंगा,
मगर तुम्हारी मसरत मिटा नहीं सकता ।
मैं खुद को मौत के हाथों में सौंप सकता हूँ,
मगर ये वारे - मसाइर^२ उठा नहीं सकता ।
तुम्हारे गम के सिवा और भी तो गम हैं मुझे,
निजात जिनसे मैं इक लहज़ा^३ पा नहीं सकता ।

ये ऊँचे - ऊँचे मकानों की डयोडियों के तले,
हर एक गाम पे^४ भूके भिकारियों की सदा^५ ।
हर एक घर में ये इफ़तास और भूख का शोर,
हर एक मिम्त^६ ये इन्मानियत की आहो-वका^७ ।
ये कारखानों में लोहे का शोरो-गुल जिसमें,
है दफन लाखों गरीबों की रूह का नग्मा ।

ये शाहराहो पे^८ रगीन सारियों की झलक,
ये भोपडों में गरीबों के बेवफन तारो ।
ये माल-रोड पे कारों की रेल-पेल का शोर,
ये पटरियों पे गरीबों के जर्द-रू बच्चे ।

१ संधोधन के दु साहस पर २ मुसीबतों का बोझ ३ दाएँ भर के लिए
४ कदम पर ५ आवाज ६ और ७ घाह, फयर्दि ८ राज्य-पथों पर

गली गली मे ये विकते हुए जवा चेहरे,
हसीन आखों मे अफसुदगी-सी^१ छाई हुई।
ये जग और ये मेरे वतन के शोख जवा,
खरीदी जाती हैं उठती जवानिया जिनकी।
ये बात-बात पे कानूनो-जावते की गिरफ्त^२,
ये जितलतें, ये गुलामी, ये दौरे - मजबूरी।
ये गम बहुत हैं मेरी जिन्दगी मिटाने को,
उदाम रहके मेरे दिल को और रज न दो



फिर न कीजे मेरी गुस्ताख - निगाहों का गिला
देखिये आपने फिर प्यार से देखा मुझको

मेरे गीत

मेरे सरकश^१ तराने सुनके दुनिया ये समझती है,
कि शायद मेरे दिल को इश्क के नग्मा से नफरत है।
मुझे हगामा - ए - जगो - जदल मे^२ कंफ^३ मिलता है,
मेरी फितरत^४ को खूरेजी^५ के अफसानो से रगवत^६ है।
मेरी दुनिया मे कुछ बकअत^७ नहीं है रक्सो-नग्मे की^८,
मेरा महबूब नग्मा^९ शोरे - आहगे - बगावत^{१०} है ॥

मगर ऐ काश ! देखें वो मेरी पुरसोज^{११} रातो को,
मैं जब तारो पे नजरें गाडकर आसू बहाता हू।
तसब्बुर बनके^{१२} भूली वारदातें^{१३} याद आती हैं
तो सोजो - दद की शिद्दत से^{१४} पहरो तिलमिलाता हू।
कोई रवाबो म, ख्वाबीदा^{१५} उमगो को जगाती है,
तो अपनी जिन्दगी को मौत के पहलू म पाता हू ॥

मैं शायर हू मुझे फितरत के^{१६} नज्जारो से उल्फत है,
मेरा दिल दुश्मने नग्मा मराई^{१७} हो नहीं सकता।
मुझे इसानियत का दर्द भी बरशा है कुदरत ने,
मेरा मरुसद^{१८} फकत^{१९} शोला-नवाई^{२०} हो नहीं सकता।
जवा हू मैं जवानी लगजिगो का^{२१} एक तूफा है,
मेरी बातो मे रगे - पारसाई^{२२} हो नहीं सकता।

१ विद्रोहपूर्ण २ युद्ध और सघप के हगामे मे ३ आनन्द ४ स्वभाव
५ खून बहाना ६ रुचि ७ महत्व ८ नृत्य और सगीत की ९ प्रिय
सगीत १० विद्रोह के सगीत का शोर ११ दद भरी १२ बल्पना बनकर
१३ घटनाए १४ तीव्रता से १५ सोई हुई १६ प्रकृति के १७ गीत गाने
का विरोधी १८ उद्देश्य १९ केवल २० आग बरसाना २१ भूलो,
गिरावटो, कमजोरियो का २२ पवित्रता का रग

मेरे सरकश तरानो की हकीकत है तो इतनी है,
कि जब मैं देखता हूँ भूक के मारे किसानो को,
गरीबो, मुफलिसो को, बेकसो को, बेसहारो को,
सिसकती नाजनीनो को, तडपते नौजवानो को,
हुक्मत के तशद्दुद को^१, अमारत के^२ तकव्युर को^३,
किसी के चीथडा को और शहनशाही खजानो को,

तो दिल तावे-निशाते-बज्मे-इथत^४ ला नही सकता ।
मैं चाहूँ भी तो ख्वाब-आवर^५ तराने गा नही सकता ॥



१ अत्याचार २ घन डीलत ३ घमड को ४ वैभवशाली समाज के ऐश्वर्य को सहन नही कर सकता ५ सुलाने वाले

अशआर^१

हरचद^२ मेरी कुब्बते-गुप्तार^३ है महबूस^४,
खामोश मगर तबअए-खुदआरा^५ नहीं होती।

माअमूरा-ए एहसाम^६ मे है हश्र-सा वर्षा^७,
इन्सान की तज़लील^८ गवारा^९ नहीं होती।

नाला हू^{१०} मैं वेदारी ए एहसास के^{११} हाथो,
दुनिया मेरे अफकार की^{१२} दुनिया नहीं होती।

वेगाना-सिफत^{१३} जादा-ए-मज़िल से^{१४} गुज़र जा,
हर चीज सजावारे-नजारा^{१५} नहीं होती।

फितरत की मशीयत^{१६} भी बड़ी चीज है लेकिन,
फितरत कभी बेवस का सहारा नहीं होती।

१ शेर २ यद्यपि ३ वाक शक्ति ४ बड़ी ५ आत्म प्रदर्शन वाली प्रकृति (स्वभाव) ६ अनुभूतियों की बस्ती ७ प्रलय मची हुई है ८ अपमान ९ सहन १० तग हूँ ११ अनुभूति की चेतना के १२ चिंतन की १३ अपरिचितता की तरह १४ मज़िल के रास्ते से १५ जिसे देखना अनिवाय हो १६ इच्छा

एक शाम

कुमकुमो की^१ जहर उगलती रोशनी,
सगदिल पुरहील^२ दीवारो के साए।
प्राहनी^३ बुत देव - पैकर^४ अजनबी,
चोखती चिघाडती सूनी सराए।

रह उलझी जा रही है, क्या करू ?

चार जानिव अर्तग्रासे - रग - ओ - नूर^५
चार जानिव अजनबी बाहो के जाल।
चार जानिव सूफशा^६ परचम^७ बुलद,
मै, मेरी गरत, मेरा दस्ते - सवाल^८।

जिन्दगी शर्मा रही है, क्या करू ?

कारगाहे - जीस्त के^९ हर मोड पर,
रहे-चगेजी^{१०} वरअफगदा-नकाव^{११}।
थाम। ऐ सुवहे-जहाने-नी^{१२} की जी^{१३},
जाग ऐ मुस्तकबिले-इन्सा के^{१४} ख्वाव।

आस डूबी जा रही है, क्या करू ?

१ बिजली के हड्डो की २ पत्थर दिल, भयभीत करत वाली ३ लौह
४ देवो के से आकार वाले ५ चारों ओर रग और प्रकाश की कपकपाहट है
६ लड़ बिसेरते हुए ७ झुंडे ८ मागने वाला हाथ ९ जिंदगी के कारखाने
(क्षेत्र) व १० चगेज (जालिम बादशाह) की आत्मा ११ नकाब उलटे हुए
१२ नव सतार की सुवह १३ प्रकाश १४ मनुष्य के भविष्य के

सोचता हूँ

सोचता हूँ कि मोहब्बत से किनारा कर लू,
दिल को बेगाना-ए-तरगीबो-तमना^१ कर लू ।

सोचता हूँ कि मोहब्बत है जुनूने - रसवा^२,
चद बेकार से बेहूदा खयालो का हुजूम ।
एक आजाद को पावद बनाने की हवस,
एक बेगाने को अपनाने की सअइ - ए- मौहूम^३।

सोचता हूँ कि मोहब्बत है सरूरो - मस्ती,
इसकी तनवीर से^४ रोशन है फजाए-हस्ती^५।

सोचता हूँ कि मोहब्बत है बशर की फितरत^६,
इसका मिट जाना मिटा देना बहुत मुश्किल है
सोचता हूँ कि मोहब्बत से है ताबिदा^७ हयात^८,
आप ये शमअ बुभा देना बहुत मुश्किल है ।

सोचता हूँ कि मोहब्बत पे कडी शर्तें है,
इस तमद्दुन मे^९ मसग्त पे बडी शर्तें है ।

सोचता हूँ कि मोहब्बत है इक अफसुर्दा-सी^{१०} लाश,
चादरे - इज्जतो - नामूस मे^{११} कफनाई हुई ।
दौरे - मर्माया की^{१२} रौंदी हुई रसवा हस्ती,
दरगहे मजहबो - इखलाक से^{१३} ठुकराई हुई ।

१ अभिलाषा तथा प्रेरणा से रहित २ बदनाम उम्माद ३ भ्रमात्मक प्रयत्न ४ प्रकाश से ५ जीवन का वातावरण ६ मानव प्रकृति ७ दीप्त ८ जीवन ९ संस्कृति में १० विन्न सी ११ इज्जत रूपी चादर में १२ पजी (के आधिपत्य) के युग की १३ धम और नतिक्रता की कचहरी से

सोचता हूँ कि वशर^१ और मोहब्बत का जुनू^२,
ऐसे दोसीदा तमद्दुन म है इक कारे - जवू^३ ।

सोचता हूँ कि मोहब्बत न बचेगी जिन्दा,
पेश-अर्जा-वक्त कि^४ सड जाय ये गलती हुई लाश,
यही बेहतर है कि बेगाना - ए - उल्फत होकर^५,
अपने सीने में करूँ जज्बा-ए-नफरत की^६ तलाश ।

और सौदा-ए-मोहब्बत से^७ किनारा कर लूँ ।
दिन को बेगाना-ए-तरगीवो-तमन्ना कर लूँ ॥



मौत आ गई न हो मेरे जौके - उमोद को^८
महम्मियो में कैफ-सा^९ पाने लगा हूँ मैं

१ मानव २ उमात् ३ बुरा काय ४ इस से पूर्व कि ५ प्रेम से
हाथ खींच कर ६ घृणा भाव की ७ प्रेमो माद से ८ आशावाद को
९ आनन्द-सा

नाकामी

मैंने हरचद गमे - इश्क को खोना चाहा,
गमे - उल्फत गमे - दुनिया में समोना चाहा ।

वही अफसाने मेरी सिम्त^१ रवा^२ है अब तक,
वही शोले मेरे सीने मे निहा^३ है अब तक ।
वही बेमूद खलिश^४ है मेरे सीने मे हनोज^५ ,
वही बेकार तमन्नायें जवा हैं अब तक ।
वही गेसू^६ मेरी रातो पे है बिखरे - बिखरे,
वही आखें मेरी जानिव निगरा हैं^७ अब तक ।

कसरते-गम^८ भी मेरे गम का मुदावा^९ न हुई,
मेरे बेचैन खयालो को सुकू^१ मिल न सका ।
दिन ने दुनिया के हर इक दद को अपना तो लिया,
मुजमहिल रूह को^{११} अदाजे-जुनू^{१२} मिल न सका ।

मेरी तखईल का^{१३} शीराजा-ए वरहम^{१४} है वही,
मेरे बुझने हुए एहसास का आलम^{१५} है वही ।
वही बेजान इरादे वही बेरग सवाल,
वही बेरूह कशाकश^{१६} वही बेचैन खयाल ।

आह ! इम कश्मकशे-सुवहो-मसा का^{१७} अजाम ।
मैं भी नाकाम, मेरी सअ्री-ए अमल^{१८} भी नाकाम ॥

१ और २ अग्रसर ३ छुपे हुए ४ चुभन ५ अभी ६ कश
७ देख रही हैं ८ गम की अधिकता ९ इलाज १० शांति ११ व्याकुल
आत्मा को १२ उमात् का डग १३ कल्पना का १४ बिखरा क्रम
१५ स्थिति १६ निर्जीव खीचातानी १७ सुबह और शाम की खीचा तानी
१८ काम करने की कोशिश

मुझे सोचने दे

मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड़,
अपनी मायूस उमगो का फसाना न सुना ।

जिन्दगी तलख सही, जहर मही, सम^१ ही सही,
दर्दों आजार^२ सही, जन्न सही, गम ही सही ।
लेकिन इस दर्दों-गमो-जन्न^३ की बुरात^४ को तो देख,
जुल्म की छाओ मे दम तोड़ती खलकत को तो देख ।
अपनी मायूस उमगो का फसाना न सुना
मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड़ ।
जला गाहो मे ये दहशतजदा^५ सहमे अबोह^६ ,
रहगुजारो पे फलाकतजदा^७ लोगो के गिरोह ।
भूख और प्यास से पजमुर्दा^८ सियहफाम^९ जमी,
तीरा ओ-तार मका^{१०} मुफलिसो बीमार मकी^{११} ।
तो ए-इन्सा मे^{१२} ये सर्माया-ओ मेहनत^{१३} का तजाद^{१४} ,
अम्नो तहजीव के परचम तले बीमो का फमाद ।
हर तरफ आतिशो-आहन का^{१५} ये सलावे-अजीम^{१६} ,
नित नये तर्ज पे होती हुई दुनिया तकसीम ।
लहलहाते हुए खेतों पे जवानी का सर्मा,
और दहकान^{१७} के छप्पर मे न बत्ती न धुआ ।

१ विप २ पीडा तथा रोग ३ दर्द, गम, अत्याचार ४ विशालता
५ आतङ्कित ६ जनसमूह ७ निधनता के मारे हुए ८ म्लान ९ काली
१० तग और अघेरे मकान ११ वासी १२ मानव जाति १३ पजी
तथा परिश्रम १४ भेद, टकराव १५ आग और लोह का १६ प्रबल
वाद १७ किसान

ये फलक - बोस^१ मिलें दिलकशो-सीमी^२ बाज़ार,
 ये गलाजत पे^३ भ्रपटते हुए भूखे नादार ।
 दूर साहिल पे वो शफाफ^४ मकानो की कतार,
 सरसराते हुए पर्दों में सिमटते गुलज़ार^५ ।
 दरो - दीवार पे अनवार का^६ मैलाव रवा^७ ,
 जैसे इक शायरे - मदहोश के^८ रवाबो का जहा ।
 ये सभी क्यों है ? ये क्या है ? मुझे कुछ सोचने दे,
 कौन इसा का खुदा है, मुझे कुछ सोचने दे ।

अपनी मायूस उमगो का फसाना न सुना ।
 मेरी नाकाम मोहब्बत की कहानी मत छेड ॥



१ गगनचुम्बी २ मनोहर और रजत ३ गङ्गी पर ४ उज्ज्वल
 ५ पुष्पवाटिकायें ६ प्रकाश वा ७ बहती बाढ ८ मदहोश

अशब्दर

अकाइद^१ वहम हैं, मजहब खयाले-खाम^२ है साकी
 अजल से^३ जहने-इन्सा^४ वस्ता-ए-अोहाम^५ है साकी
 'हकीकत-आइनाई'^६ अस्त म गुमकर्दा-राही^७ है
 रस्से - आगही^८ पर्वर्दा-ए-इबहाम^९ है साकी
 मुवारक हो जअ्रीफी को^{१०} खिरद की^{११} फल्सफादानी^{१२}
 जवानी बे नियाज - इवरते - अजाम^{१३} है साकी
 हवस होगी असीरे - हल्का - ए - नेको - बदे - आलम^{१४}
 मोह्व्वत मावरा - ए - फिक्रे - नगो - नाम^{१५} है साकी
 अभी तक रास्ते के पेचो खम से दिल धडकता है
 मेरा जीवे-तलब^{१६} शायद अभी तक ताम^{१७} है साकी
 वहा भेजा गया हू चाक करने पर्दा-ए-शब को^{१८}
 जहा हर सुवह के दामन पे अक्से-शाम^{१९} है साकी
 मेरे सागर मे मैं है और तेरे हाथो म वरवत^{२०} है
 वतन की सरजमी म भूक से कुहराम^{२१} है साकी
 जमाना बर-सरे-पैकार^{२२} है पुरहील^{२३} शो'लो से
 तेरे लव पर अभी तक नग्मा ए-खय्याम^{२४} है साकी

१ मायतायें २ अपरिपक्व धारणा ३ आदिकाल से ४ मानव
 मस्तिष्क ५ अम प्रस्त ६ सत्य का ज्ञान ७ माग भूलना ८ ज्ञान रूपी
 दुल्हन ९ अमो की पाली हुई १० बुढाप को ११ अक्ल की १२ दाश
 निक्ता १३ परिणाम के भय से उदासीन १४ ससार की (मे) अच्छाई
 बुराई के धेरे की बड़ी १५ नाम और बदनामी की चिन्ता से ऊपर
 १६ अवेपण या तलाश की अभिरुधि १७ अपक्व १८ रात के पर्दे को
 १९ शाम का प्रतिबिम्ब २० साज २१ शोर २२ सघषशील
 २३ भयवर २४ उमर खय्याम का नग्मा (क्षराव और प्रेयमी का गुण-मान)

सुबहे-नौरोज^१

फूट पडी मगरिक से किरनें

हाल बना माजी^२ का फमाना गूजा मुस्तकविल का तराना
 भेजे है अहवाव ने^३ तोहफे अटे पडे हैं मेज के कोने
 दुल्हन बनी हुई है राहे
 जश्न मनाओ साल ए-नौ के^४

निकली है वगले के दर से^५

इक मुफलिस दहकान^६ की बेटी अफसुर्दा, मुर्भाई हुई सी
 जिस्म के दुखते जोड दवाती आचल से सीने को छुपाती
 मुट्टी मे इक नोट दवाये
 जश्न मनाओ साल ए-नौ के

भूके, ज़द, गदागर^७ बच्चे

कार के पीछे भाग रहे हैं वक्त से पहले जाग उठे हैं
 पोप भरी आखें सहलाते सर के फोडो को खुजलाते
 वो देखो कुछ और भी निक्ले
 जश्न मनाओ साल ए नौ के



मुझे मालूम है अजाम रुदादे-मोहब्बत का^८
 मगर कुछ और थोड़ी देर सत्री-ए-रायगा^९ कर लू

१ नव दिवस का प्रभात २ अतीत का ३ मित्रों न ४ नव वष के
 ५ दरवाजे से ६ किसान ७ भिखारी ८ प्रेम क्या का ९ व्यथ प्रयत्न

गुरेज *

मेरा जुनूने - वफा^१ है जवाल - आमादा^२ ,
 शिकस्त हो गया तेरा फुसूने-जेवाई^३ ।
 उन आरजूओ पे छाई है गर्दे-मायूसी^४ ,
 जिन्होंने तेरे तवस्सुम म परवरिश^५ पाई ।
 फरेबे-शौक के रगी तलिस्म^६ टूट गये,
 हकीकतो ने^७ हवादिस से^८ फिर जिला^९ पाई ।
 सुकूनो रवाव के^{१०} पर्दे सरकते जाते हैं,
 दिमागो-दिल मे है वहशत की^{११} कारफमर्ई^{१२} ।
 वो तारे जिनमे मोहब्बत का तूर^{१३} तावा^{१४} था ।
 वो तारे डूब गये लेके रगो-रअनाई^{१५} ।
 मुला गई थी जिन्ह तेरी मुल्लफित^{१६} नजरें,
 वो दर्द जाग उठे फिर से लेके अगडाई ।
 अजीब आलमे अफसुदगी^{१७} है रु-व-फरोग^{१८} ,
 न अब नजर को तकाजा न दिल तमन्नाई ।
 तेरी नजर, तेरे गेसू, तेरी जबी^{१९} , तेरे लव,
 मेरी उदास तबीयत है सबसे उकताई ।
 मैं जिन्दगी के हकायक से^{२०} भाग आया था,
 कि मुझको खुद मे छुपा ले तेरी फुसू जाई^{२१} ।

*विरतता

१ प्रेमोमाद २ घट रहा है ३ शृंगार का जादू ४ निराशा की
 घूल ५ पालन-पोषण ६ जादू ७ वास्तविकताओं ने ८ दुधटनाओं से
 ९ चमक १० सपने और शान्ति के ११ झु झुलाहट की १२ वम-
 शीलता १३ प्रकाश १४ ज्योतिमय १५ रग और रूप १६ कृपाबु
 १७ उगसी की स्थिति १८ बढ़ता हुआ १९ माया २० वास्त
 विचिताओं मे २१ जादूगरी

मगर यहा भी तआवकुव बिया हवायव ने,
 यहा भी मिल न सपी जनते - शकेआई ।
 हर एव हाथ मे लेकर हजार आईने,
 हयात^१ बन्द दरीचो से भी गुजर आई ।
 मेरे हर एव तरफ एव शोर गूज उठा,
 और उसम डूब गई इथतो की^२ सहनाई ।
 कहा तलक^३ कोई जिंदा हकीकतो से बचे,
 कहा तलक वरे छुप छुप के नग्मा पैराई^४ ।
 वो देग सामने के पुरशिकोह^५ एवा से^६ ,
 किसी किराये की लडकी की चील टकराई ।
 वो फिर ममाज ने दो प्यार करने वालो को,
 मजा के तीर पर बरशी तवील^७ तनहाई ।
 फिर एक तीरा-ओ-तारीक^८ भोपडी के तले,
 सिसकते बच्चे पे वेवा की आख भर आई ।
 वो फिर बिकी किसी मजदूर की जवा बेटी,
 वो फिर भुका किसी दर पे गररे-वरनाई^९ ।
 वो फिर किसानो के मजमे पे गन-भदीनो से,
 हुकूव यापता^{१०} तवके ने^{११} आग बग्माई ।
 सुकूते - हल्का - ए - जिंदा से^{१२} एक गूँज उठी,
 और उसके साथ मेरे साथिया की याद आई ।
 नही-नही मुझे यू मुत्तफित नजर से न देख,
 नही नही मुझे अब ताबे-नग्मा-पैराई^{१३} ।
 मेरा जुनूने - वफा है जवाल-आमादा,
 शिकस्त हो गया तेरा फुसूने - जेवाई ।

१ जिंदागी २ आनंदो की ३ तक ४ गीत छेडना ५ वैभव
 शानी ६ महल से ७ दीघ ८ अधकारपूण ९ यौवन का गौरव
 १० स्वत्वधारी ११ वग ने १२ कारागार के अहाते के सनाटे से
 १३ गीत छेडने की शक्ति

कुछ बातें

देश के अदवार की^१ बातें करें,

अजनबी सरकार की बातें करे।

अगली दुनिया के फसाने छोड़कर,

इस जहन्नुमजार^२ की बातें करें।

हो चुके श्रीसाफ पदों के बर्षाँ,

शाहदे - वाजार की^३ बातें करें।

दहर के^४ हालात की बातें करे।

इस मुमलसल रात की बातें करें।

मन-ओ-सलवा का^५ जमाना जा चुका,

भूक और आफात की^६ बातें करे।

आओ परखें दीन के श्रीहाम को^७,

इल्मे - मौजूदात की^८ बातें करे।

जाबिर - ओ - मजदूर की बातें करें,

इस कुहन^९ दस्तूर की^{१०} बातें करे।

ताजे - शाही के कसीदे^{११} हो चुके,

फाकाकश जमहूर की^{१२} बातें करें।

गिरने वाले कल्ल की^{१३} तीसीफ^{१४} क्या ?

तेशा-ए-मजदूर की^{१५} बातें करें।

१ नरिद्रताओ की २ नरक भूमि ३ वेश्याओ की ४ ससार के
५ वह जमाना जब खुदा अपने नेत्र बन्दो के लिए आस्मान से फरिश्तो के हाथ
खाना भेजता था (इस्लामी रिवायत) ६ आफतो की ७ घम के भ्रम को
८ वतमान वस्तुओ के ज्ञान की ९ पुराने १० रिवाज की ११ प्रशसा
वाक्य (प्रशसा म) १२ भूखी जनता की १३ राजमहल की १४ गुण गान
१५ मजदूर के फावडे की ('फरहाद' की धोर सकेत है धोर समाजवादी युग
की धोर भी)

चकले

ये कूचे ये नीलामघर दिलकशी के,
 ये लुटते हुए कारवा जिन्दगी के,
 कहा हैं कहा हैं मुहाफिज खुदी के^१

सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक^२ कहा हैं ?

ये पुरपेच गलिया, ये वेरत्राव^३ वाजार,
 ये गुमनाम राही, ये सिक्को की भनकार,
 ये इस्मत^४ के सौदे, ये सौदो पे तकरार,

सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा हैं ?

तअपफुन^५ से पुर नीम-रौशन^६ ये गलिया,
 ये मसली हुई अघखिली ज़द कलिया,
 ये विकती हुई खोखली रग - रलिया,

सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा हैं ?

वो उजले दरीचो मे पायल की छन-छन,
 तनपफुस^७ की उलभन पे तबले की धन-धन,
 ये बेरह कमरो मे खासी की ठन ठन,

सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा हैं ?

ये गूजे हुए कहकहे रास्तो पर,
 ये चारो तरफ भीड सी खिडकियो पर,
 ये आवाजे खिचते हुए आचलो पर,

सना - ख्वाने - तकदीसे - मशरिक कहा हैं ?

१ आत्म सम्मान के २ पूब की पवित्रता के गुण गाने वाले ३ निद्रा रहित
 ४ सतीत्व ५ दुग्ध ६ मद्धम प्रकाश वाली ७ श्वास

ये फूलो के गजरे, ये पीको के छीटे,
ये वेवाक नजरें, ये गुस्ताख फिकरे,
ये ढलके वदन और ये मदकूक चेहरे^१,

सना - रवाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

ये भूखी निगाहे हमीनो की जानिव,
ये बढते हुए हाथ सीनो की जानिव,
लपकते हुए पाव जीनो की जानिव,

सना - खवाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

यहा पीर^२ भी आ चुके हैं जवा भी,
तनोमद^३ बेटे भी अब्बा मिया भी,
ये बीबी भी है और वहन भी है मा भी,

सना - खवाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

मदद चाहती है ये हब्बा की बेटो,
यशोदा की हम-जिन्स^४, राधा की बेटो,
पयम्बर की उम्मत^५, जुलैखा की बेटो,

सना - रवाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

बुलाओ, खुदायाने - दी को^६ बुलाओ,
ये कूचे, ये गलिया, ये मन्जर दिग्वाओ,
सना-रवाने तकदीसे-मशरिक को लाओ,

सना - खवाने - तकदीसे - मशरिक कहा है ?

१ क्षयप्रस्त २ बूढे ३ हृष्ट-शुष्ट ४ सहजातीय ५ अनुयायी समुदाय
६ मजहब या धर्म के ठेठेदारों को

तरहे-नी०

मअई-ए-बका-ए-शौकते अमकदरी^१ की खैर,
माहौले खिश्तवार मे^२ शीशागरी को^३ खैर ।

वेजार है कनिश्तो-क्लीमा से^४ इक जहा,
सौदागराने - दोन की^५ मौदागरी की खैर ।

फाकाऊशो के खून मे है जोशे-इन्तिकाम^६,
सर्माया^७ के फरेबे-जहा-परवरी^८ की खैर ।

तवकाते-मुव्जल मे^९ है तनजीम^{१०} की नमूद^{११},
शाहनशहो के जाब्ता-ए-पुदसरी की^{१२} खैर ।

एहसास बढ रहा है हुकूके-दयात^{१३} का,
पैदाइशी हुकूके - सितमपवरी की^{१४} खैर ।

इव्लीस^{१५} खदाजन है^{१६} मजाह्व को^{१७} लाश पर,
पैगम्बराने दहर की^{१८} पैगम्बरी की खैर ।

सहने जहा मे^{१९} रक्सकुना^{२०} हैं तवाहिया,
आका ए हस्तो-बूद की^{२१} सनअनगरी की खैर ।

* नई नींव

१ बादशाहत के बचाव का प्रयत्न २ पत्थर बरसाते हुए घातावरण मे
३ काच ढालने की ४ मस्जिद और मस्जिद स ५ घम के व्यापारियों की
६ बदना लेने का जोग ७ पूजा के ८ समार को पालने के फरेब ९ निचले
वर्गों मे १० सगठन ११ प्रादुर्भाव १२ विद्रोहियों को कुचलने के कानून
१३ जीवन के अधिकारो १४ अत्याचार करने के ज म सिद्ध अधिकारो की
(Divine Right of Kings) १५ गतान १६ हँस रहा है
१७ मजहदों की १८ दुनिया के पैगम्बरों की १९ सत्तार के आगमन मे
२० नुस्यदील २१ अतीत और वतमान के मालिक (खुदा) की

शौले लपक रहे हैं जहन्नुम की गोद से,
 वागे-जना मे^१ जल्वा-ए-हूरो-परी की^२ खैर ।
 इन्सा उलट रहा है रुखे-जोस्त से^३ नकाव,
 मजहब के एहतमामे-फुसू - परवरी^४ की खैर ।
 इलहाद^५ कर रहा है मुरत्तिव^६ जहाने-नी^७,
 दैरो-हरम के^८ हीला-ए-गारतगरी की^९ खैर ।



१ स्वय की वाटिका मे २ हूरो और परियो के जलवे की ३ जीवन के
 मुख पर से ४ जादू चलान के प्रयत्न ५ नास्तिकता ६ सम्पादन ७ नव
 ससार ८ मन्दिर मस्जिद ९ घबरा या फूट डालने के प्रयत्न की

ताजमहल

ताज तेरे लिए एक मजहरे-उत्पन^१ ही सही,
तुझको इस वादिये-रगो^२ से अवीदत^३ ही मही,
मेरी महहूब^४ । कही और मिला घर मुझ से ।

वज्जे-शाही मे^५ गरीबों का गुजर, क्या मानी ?
सव्त^६ जिस राह पे हो सतवते-शाही के^७ निशा,
उस पे उल्फन-भरी रूहा का^८ सफर क्या मानी ?

मेरी महहूब, पमे - पर्दा - ए - तगहोरे - वफा^९,
तूने सतवत^{१०} के निशानों को तो देखा होता ।
मुर्दा शाहों के मकादिर से^{११} बहलने वाली !
अपने तारीफ^{१२} मकानों को तो देखा होता ।

अनगिनत लोगो ने दुनिया मे मोहद्वत की है,
कौन कहता है कि सादिक^{१३} न थे जजबे उनके ?
लेकिन उनके लिए तशहीर^{१४} का सामान नहीं,
क्योकि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफलिस^{१५} थे ।
य इमारतों मकादिर^{१६}, ये फसोलें, ये हिसार^{१७},

१ प्रेम श्रोतक २ रमणीय स्थान ३ अज्ञा ४ प्रियसी ५ शाही दरबार मे ६ अकित ७ शाही वभव के ८ आत्माओं का (प्रेमियों का) ९ वफा (प्रेम) के विज्ञापन के पर्दों के पीछे १० वभव ११ मकबरो से १२ अघकारपूण १३ सच्चे १४ विज्ञापन १५ निधन १६ इमारतें और मकबरे १७ किले

मुतलक-उल-हुवम^१ शहनशाहो की अजमत^२ के सतू^३
 दामने - दहर पे^४ उम रग की गुलकारी है,
 जिस म शामिल है तेरे श्रीर मेरे अजदाद^५ का खू ।

मेरी महल्लव ! उन्हे भी तो मोहब्बत होगी,
 जिनकी सप्राई ने^६ बढशी है* इसे शकले-जमील^७ ।
 उनके प्यारो के मकाविर रहे वे - नामो - नुसूद^८,
 आज तक उन पे जलाई न किसी ने वदील^९ ।
 ये चमनजार^{१०}, ये जमना का किनारा, ये महल्ल,
 ये मुनक्कश^{११} दरो-दीवार, ये महराज, ये ताक ।
 इक शहनशाह ने दीलत का सहारा लेकर,
 हम गरीबो की मोहब्बत का उडाया है मजाक ।
 मेरी महल्लव वही श्रीर मिला कर मुभसे ।



हयात इक मुस्तकिल गम के सिवा कुछ भी नहीं शायद
 सुशी भी याद आती है तो आसू बनके आती है

१ स्वेच्छाचारी २ महानता ३ स्तम्भ ४ सप्तर के दामन पर
 ५ पूवजो ६ बारीगरी ने ७ प्रदान की है ८ सुन्दर रूप ९ जिसका
 कोई गम व निदान तक नहीं १० दीप ११ बघान १२ चित्रित

लम्हा-ए-गनीमत^१

मुस्करा, ऐ जमीने - तीरा - ओ - तार^२
सर उठा, ऐ दबी हुई मखलूक^३

देख वो मगरिवी उफक के^४ करीव
आधिया पेचोताव खाने लगी
और पुराने कमार - खाने मे^५
कुहना^६ शातिर^७ वहम^८ उलभने लगे
कोई तेरी तरफ नही निगरा^९
ये गिराबार^{१०}, सद जजीरें
जग-खुदा^{११} है, आहनी^{१२} ही सही
आज मौका है, टूट सकती हैं
फुसते - यक - नफस^{१३} गनीमत जान
सर उठा ऐ दबी हुई मखलक



१ दुलम क्षण २ अघकारमय घग्ती ३ मानव जाति ४ क्षितिज के
५ जूएखाने म ६ पुराने ७ जुवारी ८ धापस म ९ देख रहा
१० बोभल ११ जग खार्द हुई १२ लाहे की १३ एन सास (क्षण)
की फुसत

तुलूअ ए-इशतराकियत^१

जश्न बपा^२ है कुटियाओ म ऊँचे ऐवाँ^३ काप रहे हैं,
मजदूरो के बिगडे तेवर देख के सुलता काप रहे हैं ।

जागे है इपलास के^४ मारे, उटठे है बेबस दुखियारे,
सीनो मे तूफा का तलानुम^५, आखी मे विजली के शरारे ।

चौक चौक पर, गली-गली म, सुख फरेरे^६ लहराते हैं,
मजलूमो के बागी लश्कर सैल-सिफत^७ उमडे आते है ।

शाही दरवारो के दर से फौजी पहरे खत्म हुए है,
जाती^८ जागीरो के हक और मोहमल^९ दावे खत्म हुए हैं ।

घोर भचा है बाजारो मे, टूट गये दर जिन्दानो के^{१०},
वापस माग रही है दुनिया गसब-शुदा हक^{११} इमानो के ।

रुमवा बाजारी खातूने^{१२} हक-ए नसाई^{१३} माग रही है,
सदियो की खामोश जवानें सहर-नवाई^{१४} माग रही है ।

रोदी-कुचली आवाजा के शोर से धरती गूज उठी है ।
दुनिया के अन्याय नगर म हक की पहली गूज उठी है ।

जमग्र हुए है चौराहो पर आकर भूखे और गदागर^{१५},
एक लपकती आधी बनकर, एक भभकता शोला होकर ।

१ साम्यवाद का उदय २ उ सब हो रहा है ३ महल ४ निघनता के ५ जोर ६ भडे ७ तूफान का रूप धारण किये हुए ८ व्यक्तिगत ९ निरर्थक १० फारागारो के द्वार ११ हडपे हुए अधिकार १२ अपमानित बाजारी औरतें १३ स्त्रीत्व का अधिकार १४ आवाज से जादू जगाने का अधिकार १५ भिलारी

काधा पर सगीन कुदालें, होटो पर बे
दहकानो के दल निकले हैं अपनी विगडी

आज पुरानी तदबीरो से^१ आग के शोअले :
उभरे जज्बे दव न सकेगे, उखडे परचम^२ ज

राजमहल के दरबानो से ये सरकश तूफा
चन्द किराए के तिनको से मैले बेपाया^३

काप रहे हैं जालिम सुल्ता, टूट गये दिल :
भाग रहे हैं जिल्ले - इलाही^४ मुंह उतरे है

एक नया सूरज चमका है, एक अनोखी
खत्म हुई अफराद की शाही^५, अब जमहूर^६ की



अजनबी मुहाफिज^१

अजनबी देस के मजबूत गराडील^२ जवा
 ऊचे होटल के दरे-खास पे^३ इस्तादा है^४
 और नीचे मेरे मजबूर वतन की गतिया
 जिनमे आबारा फिरा करते हैं भूखो के हुजूम
 जर्द चेहरो पे नकाहत की^५ नमूद^६
 खून मे सँकडो सालो की गुलामी का जमूद^७
 इल्म के नूर से आरी^८ — महरूम
 फलक-ए हिन्द के^९ अफसुदा नजूम^{१०}
 जिनकी तखईल के^{११} पर
 छू नहीं सकते हैं उस ऊचो पहाडी का सिरा
 जिस पे होटल के दरीचो म खडे है तनकर
 अजनबी देश के मजबूत गराडील जवा
 मुह मे सिग्रेट लिये हाथो म ब्राडी के गिलास
 जेब मे नुकरई^{१२} सिक्को की खनक
 भूके दहकानो के^{१३} मायो का अरक^{१४}
 रात को जिसके एवज^{१५} विकता है
 किसी इपलास की मारी का^{१६} तकद्दुस^{१७}—यानी
 किसी दोशीजा-ए-मजबूर की^{१८} इस्मत का गुरुर

१ अपरिचित रक्षक (अमरीकी सिपाही जो दूसरे महायुद्ध म अंग्रेजी राज्य की ओर से भारत को जापानी आक्रमण से सुरक्षित रखने के लिए बुलाए गये थे) २ भारी भरकम, लम्बे चौड़े ३ खास दरवाजे पर ४ खडे हैं ५ कमजोरी की ६ झलक ७ जमाव ८ बचित ९ भारतीय गगन के १० उदास तारे ११ कल्पना के १२ रजत १३ किसानों के १४ पसीना १५ बदले मे १६ निधनता की मारी का १७ पवित्रता १८ विवश कुमारी की

महफिले-ऐश के गूजे हुए ऐवानो मे^१
ऊचे होटल के शबिस्तानो म^२
कहकहे मारते हैंसते हुए इस्तादा है
अजनबी देस के मजबूत गराडोल जवा

इसी होटल के करीब
भूके मजदूर गुलामो के गिरोह
टिकटिकी बाध के तकते हुए ऊपर की तरफ
मुन्तजिर बैठे है उस साअते-नायाब के^३ — जब
बूट की नोक से नीचे फैंके
अजनबी देस के बेफिक्र जवानो का गिरोह
कोई सिक्का, कोई सिग्रेट, कोई केक
या डवलरोटी के भूठे टुकडे
छीना-भूपटी के मनाज़िर का^४ मजा लेने को
पालतू कुत्तो के एहसास पे हँस देने को
भूके मजदूर गुलामो का गिरोह
टिकटिकी बाध के तकता हुआ इस्तादा है

काश ! ये बेहिसो-बेवकअतो-बेदिल^५ इसा
रोम के जुल्म की जिंदा तमचीर
अपना माहौल बदल देने के काबिल होते

१ महलो म (मुसज्जित कमरो म) २ शयनागारों म ३ दुलभ धरण के
४ दृष्यो का ५ जड, महत्वहीन और निराग

बुलावा

देखो दूर जफक की^१ जो से^२ भाक रहा है सुखं सवेरा
जागो ऐ मजदूर किमानो !
उट्ठो ऐ मजलूम दस्तानो !

घरती के अनदाता तुम हो जग के प्राण विघाता तुम हो
धनियो की खुशहाली तुम से खेतो मे हरियाली तुम से
उचे महल बनाये तुमने शाही तख्त सजाये तुमने
हीरे, लाल निकाले तुमने नेजे भाले ढाले तुमने
हर वगिया के माली तुम हो इस समार के वाली^३ तुम हो
बक्त है घरती को अपना लो आगे बढो हथियार सभालो
उट्ठो ऐ मजलूम इसानो !
जागो ऐ मजदूर किमानो !

देगो घरती बाप रही है गंद, फरेरे^४ ढाप रही है
बघ्ट ती ज्वाला फूट पडी है वक्त है घोहा जग बडी है
फँस रहे हैं काल के घेरे धामो अपने मुगं फरेरे
तुम हो जग-जनना के सैनिक पाप ते तागा, मत्प के रक्षक
भग के आदी, जुन्म के पाले वाली घुटियाघों के उजाले
कसा गेरेगी तुमते नाही तुम हो बहादुर मुग गिपाही
जागो ते मजदूर किमानो !
उट्ठो ऐ मजलूम इगानो !
दगो दूर उजग की जो से, भाव रहा है मुग सवेरा

शहजादे

जहन^१ मे अजमते - अजदाद के^२ किस्से लेकर
 अपने तारीक^३ घरीदो के खला म^४ खो जाओ
 मरमरी^५ टनावो की परियो से लिपटकर सो जाओ
 अन्नपारो पे^६ चलो, चाद सितारो मे उडो
 यहो अजदाद मे विरसे मे भिला है तुमको
 दूर मगरिव की फजाओ मे^७ दहकती हुई आग
 अहले - सर्माया की^८ आवेजिशे - वाहम^९ न सही
 जगे - सर्माया - ओ - मेहनत ही सही
 दूर मगरिव म है—मशरिक की फजा म तो नही
 तुमको मगरिव के बखेडो से भला क्या लेना ?
 तीरगी^{१०} खत्म हुई, सुख शुआएँ^{११} फँली
 दूर मगरिव की फजाओ मे तराने गूजे
 फतहे - जमहर के^{१२}, इन्साफ के, आजादी के
 साहिले - शक पे^{१३} गैसो का धुआ छाने लगा
 आग बरसाने लगे अजनबी तीपो के दहन^{१४}
 रवाबगाहो की^{१५} छतें गिरने लगी
 अपने बिस्तर से उठो !
 नये आकाओ की ताम्रजोम^{१६} करो
 और—फिर अपने घरीदो के खला मे खो जाओ
 तुम बहुत देर—बहुत देर तलक सोए रहे

१ मस्तिष्क २ पूबजो की महानता के ३ अघेरे ४ शूय मे
 ५ रजत ६ वादल के टुकडो पर ७ वातावरण म ८ पूजीपतियो की
 ९ परस्पर खीचातानी १० अघकार ११ किरनें १२ जनता की विजय के
 १३ पूरब के तट पर १४ मुँह १५ शयनागारो की १६ आदर स्वागत

शुआ-ए फर्दा^१

तीरा-ओ-तार^२ फजाओ मे^३ सितम खुर्दा बशर^४
 और कुछ देर उजाले के लिए तरसेगा
 और कुछ देर उठेगा दिले-गेती से^५ घुआ
 और कुछ देर फजाओ से लहू बरसेगा

और फिर, अहमरी-होटो के^६ तबस्सुम^७ की तरह
 रात के चाक से फूटेगी शुआओ की^८ लकीर
 और जमहूर के^९ बेदार तआवुन^{१०} के तुफल^{११}
 खत्म हो जायेगी इसा के लहू की तकतीर^{१२}

और कुछ देर भटक ले मेरे दरमादा नदीम^{१३}
 और कुछ दिन अभी जहराब के^{१४} सागर पीले
 नूर-अफशा^{१५} चली आती है उहसे-फर्दा^{१६}
 हाल, तारीको-सम-अफशा^{१७} मही, लेकिन जीले

१ भविष्य का प्रकाश २ तग और अघेरी ३ वातावरण ४ पीटित मानव ५ धरती क हृदय से ६ लाल होठो के ७ मुस्कराहट ८ बिरतो की ९ जनता के १० चेतन सहयोग ११ फल-स्वरूप १२ कतरा कतरा टपकना (मर्क खचने की क्रिया) १३ बके हारे साथी १४ विप के १५ उजाला छिड़कती १६ भविष्य रूपी दुल्हन १७ अघकारमय तथा विप विखेरता हुआ

बगाल

जहाने कुहना के^१ मफलूज^२ फरमफादानो^३ ।
निजामे-नौ के^४ तकाजे सवाल करते है—

ये शाहराहे^५ इमी वास्ते बनो थी क्या
कि इन पे देम की जनता सिसक-मिसक के मरे ?
जमी ने क्या इमी कारण अनाज उगला था
कि नस्ले-आदमो-हब्बा^६ बिलक-बिलक के मरे ?

मिलेँ इसीलिए रेगम के ढेर बुनती है
कि दुखतराने - वतन^७ तार तार को तरसें ?
चमन को इसलिए माली ने खू से सीचा था
कि उसकी अपनी निगाहे बहार को तरसें ?

जमी की कुव्वते-तखलीक के^८ खुदावन्दो^९ ।
मिलो के मुन्तजिमो^{१०} सत्तात के फजन्दो^{११} ।

पचास लाख फसुर्दा^{१२} गले - सडे ढाचे
निजामे-जर के^{१३} खिलाफ एहतजाज^{१४} करते है
खमोश होटो से, दम तोडती निगाहो से
बशर^{१५}, बशर के खिलाफ एहतजाज करते हैं

(बगाल के अकाल के समय)

१ पुरानी दुनिया के २ पगु ३ दासनिको ४ नव व्यवस्था के
५ राजपथ ६ मानव जाति ७ देश की बेटीया ८ उपज शक्ति ९ मालिको
१० प्रबन्धको ११ बेटी १२ निर्जिव १३ पूँजीवाद के १४ विरोध प्रकाशन
१५ मनुष्य

फनकार^१

मैंने जो गीत तेरे प्यार की खातिर लिखे,
आज उन गीतों को बाजार में ले आया हूँ ।

आज दूकान पे नीलाम उठेगा इनका,
तूने जिन गीतों पे रखी थी मोहन्त की असास^२ ।
आज चादी के तराजू में तुलेगी हर चीज़,
मेरे अफकार^३, मेरी शायरी, मेरा एहसास ।

जो तेरी ज्ञात से मनसूज थे^४, उन गीतों को,
मुफलिमी जिन्म^५ बनाने पे उतर आई है ।
भूख, तेरे खूब-रगो के^६ फमानों के एवज,
चन्द अशिया ए-जूरत की^७ तमनाई है ।

देख इस अर्मा - गहे - मेहनतो - सर्माया^८ में,
मेरे नग्मे भी मेरे पास नहीं रह सकते ।
तेरे जल्वे किसी जूरदार^९ की भीरास सही,
तेरे खाके^{१०} भी मेरे पास नहीं रह सकते ।

आज इन गीतों को बाजार में ले आया हूँ ।
मैंने जो गीत तेरे प्यार की खातिर लिखे ॥

१ कलाकार २ नीव ३ रचनाएँ ४ सम्बंधित थे ५ खाद्य-मदाय
६ रगीन चेहरे के ७ जूरत की चीजों की ८ मेहनत और पूजी के क्षेत्र में
९ पूजीपति १० रेखा चित्र, शब्द चित्र

कभी-कभी

कभी-कभी मेरे दिल में खयाल आता है ।

कि जिन्दगी तेरी जुल्फों की नम छात्रों में,
गुजरने पाती तो शादाब हो भी सकती थी ।
ये तीरगी^१ जो मेरी जीस्त का मुकद्दर^२ है,
तेरो नजर की शुआओं में^३ खो भी सकती थी ।

अजब न था कि मैं बेगाना ए-अलम^४ रहकर,
तेरे जमाल की^५ रसनाइयो में^६ खो रहता ।
तेरा गुदाज बदल^७, तेरो नीम-बाज^८ आँखें,
इन्ही हसीन फमानो में महव^९ हो रहता ।

पुकारती मुझे जब तल्लिया^{१०} जमाने की,
तेरे लवो से^{११} हलाबत के^{१२} घूट पी लेता ।
हयान^{१३} चीखती फिरती बरहना-मर^{१४} गौर में,
घनेरी जुल्फों के साथे में छुपके जी लेता ।

मगर ये हो न सका और अब ये आलम^{१५} है,
कि तू नहीं, तेरा गम, तेरी जुस्तजू भी नहीं ।
गुजर रही है कुछ इस तरह जिन्दगी जैसे,
इसे किसी के सहारे को आरजू भी नहीं ।

१ अघेरा २ जीवन का भाग्य ३ रश्मियों में ४ दुखों से अपरिचित
५ सौंदर्य की ६ लावण्यताओं में ७ मदुल, मासल ८ अघखुली ९ निमग्न
१० कटुताएँ ११ होठों से १२ माधुर्य, के, रस के १३ जीवन १४ नगे
सिर १५ स्थिति

जमाने भर के दुखो को लगा चुका हू गले,
 गुजर रहा हू कुछ अनजानी रहगुजारो से ।
 मुहीब^१ साए मेरी सिम्त बदले आते हैं,
 हयातो - मौत^२ के पुरहील खारजारो से^३ ।

न कोई जादह^४ न मजिल न रीशनी का सुराग,
 भटक रही है खलाओ मे^५ जिन्दगी मेरी
 इन्ही खलाओ मे रह जाऊगा कभी खो कर,
 मे जानता हू मेरी हम - नफस^६ , मगर यूही,

कभी-कभी मेरे दिल मे खयाल आता है ।



अपनी तबाहियों का मुझे कोई गम नहीं
 तुमने किसी के साथ मोहब्बत निभा तो दी

१ भयानक २ जीवन तथा मृत्यु ३ भयावह कटीले जपलों से ४ माग
 ५ तूय मे ६ सहचर

फरार^१

अपने माजी के^२ तसब्बुर^३ से हिरासा^४ हूँ मैं,
अपने गुजरे हुए ऐयाम से^५ नफरत है मुझे।
अपनी बेकार तमन्नाओ पे शरमिन्दा हूँ,
अपनी बेसूद^६ उमीदो पे नदामत है मुझे।

मेरे माजी को अघेरे मे दवा रहने दो,
मेरा माजी मेरी जितलत के सिवा कुछ भी नहीं।
मेरी उम्मीदो का हासिल, मेरी काविश का^७ सिला^८,
एक बेनाम अजीयत के^९ सिवा कुछ भी नहीं।

कितनी बेकार उमीदो का सहारा लेकर,
मैंने ऐवान^{१०} सजाये थे किसी को खातिर।
कितनी बेरबत^{११} तमन्नाओ के मुबहम खाके^{१२},
अपने रवावो मे वसाये थे किसी की खातिर।

मुझसे अब मेरी मोहब्बत के फमाने^{१३} न कहो,
मुझको कहने दो कि मैंने उन्हें चाहा ही नहीं।
और वो मस्त निगाहे जो मुझे भूल गईं,
मैंने उन मस्त निगाहो को सराहा ही नहीं।

१ पलायन, नरास्य २ अतीत के ३ कल्पना ४ भयभीत ५ दिनो
से ६ व्यय ७ प्रयत्न का ८ बदला ९ कष्ट दे १० महन ११ अनमेल
१२ अस्वष्ट चित्र १३ कहानिया

मुझको कहने दो कि मैं आज भी जी सकता हूँ,
इश्क नाकाम सही, जिन्दगी नाकाम नहीं ।
उन्हे अपनापने की खाहिश, उन्हे पाने की तलब,
शौके-वेकार^१ मही, सअइ-ए-गम-अजाम^२ नहीं ।

वही गेसू^३, वही नजरे, वही ग्रारिज^४, वही जिस्म,
मैं जो चाहू तो मुझे और भी मिल सकते हैं ।
वो कवल जिनको कभी उनके लिए खिलना था,
उनकी नजरो से बहुत दूर भी खिल सकते हैं ।



कल और आजा

[१]

कल भी बूदे बरसी थी,
कल भी बादल छाये थे,

और कवि ने सोचा था !

बादल, ये आकाश के सपने उन जुल्फों के साथे हैं,
दोशे-हवा^१ पर मैखाने ही मैखाने घिर आये है।
रत बदलेगी फूल खिलेंगे भोके मध बरसायेंगे,
उजले-उजले खेतों में रगी आचल लहरायेंगे।
चरवाहे बसी की धुन से गीत फज्जा में बोर्येंगे,
आमों के झुंडों के नीचे परदेसी दिल खोर्येंगे।
पीग बढ़ाती गोरी के माथे से कींदे लपकेंगे,
जोहड़ के ठहरे पानी में तारे आखे झपकेंगे।
उलभी-उलभी राहों में वो आचल थामे आर्येंगे,
धरती, फूल, आकाश, सितारे सपना-सा बन जायेंगे।

कल भी बूदे बरसी थी,
कल भी बादल छाये थे,

और कवि ने सोचा था !

[२]

आज भी बूढ़ें वरसेंगी,
आज भी बादल छाये हैं,

और कवि इस सोच में है ।

बस्ती पर बादल छाये है, पर ये बस्ती किसकी है ?
धरती पर अमृत बरसेगा, लेकिन धरती किसकी है ?
हल जोतेगी खेतों में अल्हड़ टोली दहकानों की^१,
धरती से फूटेगी मेहनत फाकाकश इन्सानों की ।
फसलें काट के मेहनतकश, गल्ले के ढेर लगायेंगे,
जागीरों के मालिक आकर सब 'पूजी' ले जायेंगे ।
बूढ़े दहकानों के घर बनिये की कुर्की आयेगी,
और कर्जों के सूद में कोई गोरी बेची जायेगी ।
आज भी जाता भूखी है और कल भी जनता तरसी थी,
आज भी रिमझिम बरसा होगी, कल भी वारिश बरसी थी ।

आज भी बादल छाये हैं,
आज भी बूढ़ें वरसेंगी,

और कवि इस सोच में है ।

हिरास^१

तेरे होटो पे तबस्सुम^२ की वो हल्की-सी लकीर,
मेरे तखईल मे^३ रह-रह के भलक उठती है।
य अचानक तेरे आरिज का^४ खयाल आता है
जैसे जुलमत म^५ कोई शम्मअ भडक उठती है।

तेरे पैराहने-रगी की^६ जुनुंखेज^७ महक,
रवाब बन-बन के मेरे जहन म^८ लहराती है।
रात की सर्द खमोशी मे हर इक भोके से,
तेरे अनफास^९, तेरे जिस्म की आच आती है।

मैं सुलगते हुए राजो को^{१०} अया^{११} तो करदू,
लेकिन इन राजो की तशहोर से^{१२} जो डरता है।
रात के रवाब उजाले म बया तो कर दू,
इन हसी रवावा की ताम्बोर से^{१३} जो डरता है।

तेरे सासो की थकन तेरी निगाहो का सुकूत^{१४},
दर हकीकत^{१५} कोई रगीन शरारत ही न हो।
मै जिसे प्यार का अदाज समझ वैठा हू,
वो तबस्सुम^{१६} वो तक्ल्लुम^{१७} तेरी आदत ही न हो।

१ भय २ मुस्कराहट ३ कल्पना म ४ कपोलों का ५ अंधेरे
म ६ रगीन तिलास की ७ उमाद-भूण ८ मस्तिष्क म ९ द्वात
१० भेदो को ११ प्रकट १२ विज्ञापन से १३ स्वप्न-पल स १४ चुप्पी
१५ वास्तव म १६ मुस्कराहट १७ बात चीत (का ढग)

सोचता हू कि तुझे, मिलके मैं जिस सोच में हू,
 पहले उस सोच का मकसूँ^१ सगभू लूँ तो कहूँ।
 मैं तेरे शहर में अनजान हूँ परदेसी हूँ,
 तेरे अल्ताफ^२ का मफहूम^३ समझ लूँ तो कहूँ।

कही ऐसा न हो पाओ मेरे थर्रा जायें,
 और तेरी भरमरी^४ बाँहों का सहारा न मिले।
 अश्व बहते रहे खामोश सियाह^५ राता मैं,
 और तेरे रेशमी आचल का किनारा न मिले।



१ भाग्य (परिणाम) २ वृषाओ का ३ तात्पर्य ४ सगमरमर
 की बनी (धवल, गोरी) ५ सियाह (काली)

इसी दोराहे पर ।

अब न इन ऊँचे मकानों में कदम रखूंगा,
 मेने इक बार ये पहले भी कमम खाई थी ।
 अपनी नादार मोहब्बत की शिकस्तों के तुफूल,
 ज़िन्दगी पहले भी शर्माई थी झुझलाई थी ।

और ये अहद^१ किया था कि व-ई-हाले-तवाह^२,
 अब कभी प्यार भरे गीत नहीं गाऊँगा ।
 किसी चिलमन ने पुकारा भी तो बढ जाऊँगा,
 कोई दरवाजा खुला भी तो पलट आऊँगा ।

फिर तेरे कापते होंटों को फुसूँकार^३ हूँसी,
 जाल बुनने लगी, बुनती रही, बुनती ही रही ।
 मैं खिचा तुझसे, मगर तू मेरी राहों के लिए,
 फूल चुनती रही, चुनती रही, चुनती ही रही ।

बर्फ बरसाई मेरे जहनो-तसब्बुर ने^४ मगर,
 दिल में इक शोला-ए-बेनाम-भा^५ लहरा ही गया
 तेरी चुपचाप निगाहों को सुलगते पाकर,
 मेरी बेजार तबीयत को भी प्यार आ ही गया ।

१ प्रतिज्ञा २ यो तवाह हाल होने पर ३ जादू भरी ४ मस्तिष्क
 तथा कल्पना ने ५ बेनाम सा शोला

अपनी बदली हुई नज़रो के तकाज़े न छुपा,
 मैं इस अदाज का मफहूम^१ समझ सकता हूँ।
 तेरे ज़रकार^२ दरीचो की बुलदी की कसम,
 अपने अकदाम का मकसूम^३ समझ सकता हूँ।

‘अब न इन ऊँचे मकानों में कदम रक्खूंगा’,
 मैंने एक बार ये पहले भी कसम खाई थी।
 इमी सर्माया ओ-इफलास के दौराहे पर,
 जिन्दगी पहले भी शर्माई थी भुभलाई थी।



एक तस्वीरे-रंग

मैंने जिस वक़्त तुम्हें पहले-पहल देखा था,
तू जवानी का कोई ख़्वाब नज़र आई थी।
हुस्न का नग्मा ए-जावेद^१ हुई थी मालूम,
इश्क का जज्बा-ए-बेताव^२ नज़र आई थी।

ऐ तरबज़ारे-जवानी^३ की परीशा तितलो,
तू भी इक् बू-ए गिरफ्तार^४ है, मालूम न था।
तेरे जलवो म बहारें नज़र आती थी मुझे,
तू सितम-ख़ुदाए-अदबार^५ है, मालूम न था।

तेरे नाजुक-से परो पर ये जरो-सीम का^६ बोझ,
तेरी परवाज़^७ को आज़ाद न होने देगा।
तूने राहत की तमन्ना म जो गम पाला है,
वो तेरी रूह को आबाद न होने देगा।

तूने समायि की छाओ मे पनपने के लिए,
अपने दिल, अपनी मोह-उत का लहू बेचा है।
दिल की तज़ईने फुसुर्दा^८ का असासा^९ लेकर,
शोख़ रातो की मसरत का^{१०} लहू बेचा है।

१ घमर सगीत २ विफल भावना ३ जीवन रूपी उद्यान ४ बन्दी
मुग़ल ५ दुर्भाग्य के हाथों पीड़ित ६ सोने चाँदी का ७ उद्यान ८ फीकी
सज्जा ९ निधि १० भ्रान्त का

जन्म-सुर्दा^१ हैं तपय्युल की^२ उडानें तेरी,
तेरे गीतों में तेरी रुह के गम पलते हैं।
सुमगो^३ आखों में यूँ हसरते ली देती है,
जैसे वीरान मजारों में दिये जलते हैं।

इससे क्या फायदा रगोन लबादों के^४ तले,
रुह जलती रहे, घुलती रहे, पज़मुर्दा^५ रहे।
होट हँसते हो दिवावे के तबस्सुम^६ के लिए,
दिल गमे-ज़ीस्त^७ में बोझल रहे आज़ुर्दा^८ रहे।

दिल की तस्की^९ भी है आसाइशे-हस्ती^{१०} की दलील,
ज़िन्दगी सिर्फ़ ज़रो-मीम का पमाना नहीं।
जीस्त एहसास^{११} भी है, शौक भी है, दद भी है,
सिर्फ़ अनफ़ास^{१२} की तरतीब का अफ़साना^{१३} नहीं।

उम्र भर रंगते रहने से कहीं बेहतर है,
एक लम्हा जो तेरी रुह में बसअत^{१४} भर दे।
एक लम्हा जो तेरे गीत को शोखी दे दे,
एक लम्हा जो तेरी लँ में मसरत भर दे ॥

१ घायल २ कल्पना की ३ सुर्मा भरी ४ वस्त्रा क ५ मुभार्द
हुई ६ मुस्कराहट ७ जीवन के गम ८ दुखी ९ तपति, सतोष
१० जीवन के सुख ११ अनुभूति १२ इबामो की १३ कहानी
१४ विशालता

एहसासे कामराँ^१

उफके रुम से^२ फूटी है नई सुवह की जी^३,
जुलमते शव का^४ जिगर चाक हुआ जाता है।
तीरगी^५ जितना सभलने के लिए रुकती है,
सुखं सैल^६ और भी बेबाक^७ हुआ जाना है।

नामराज अपने वमीलो पे भरोसा न करे,
कुहना^८ जजीरा की भकारे नही रह सकती।
जब्बा-ए नुसरते-जमहूर की^९ बढ़ती रौ मे,
मुल्क और कौम की दीवारें नही रह सकती।

सगो-आहन की^{१०} चटानें हैं अवामी^{११} जख्मे,
मीत के रेगते सायो से कहो, हट जायें।
करवटें लेके मचलने वो हे सैले-अनवार^{१२},
तीरा ओ तार^{१३} घटाओ से कहो, छट जाये।

सालहा-साल के बेचैन शरारो का खरोश^{१४},
इक नई जीस्त का^{१५} दर वाज^{१६} किया चाहता है।
अज्मे-आजादी-ए-इसा^{१७} ब - हजारा जवरूत^{१८},
इक नये दौर का आगाज^{१९} किया चाहता है।

१ इण्टसिद्धि का अनुभव २ हस के क्षितिज से ३ किरन रात
की सियाही का ५ सियाही ६ बाढ ७ प्रचड ८ पुरानी ९ जनता
की विजय पाने की इच्छा की १० पर्यर और लोहे की ११ जनता के
१२ प्रकाश का तूफान १३ अघेरी १४ जोश १५ जिन्दगी का
१६ दरवाजा खोलना १७ मानव स्वतन्त्रता प्राप्त करने का सक्षय
१८ अत्यन्त महानता सहित १९ प्रारम्भ

बरतर अक्वाम के^१ मगरूर सुदायो मे व्हो
 आखरी वार जरा अपना तराना दोहराए ।
 श्रीर फिर अपनी सियामत पे परोमा होकर,
 अपने नाकाम इरादो ता तफन ले आवें ।

सुर्ग तूफान की मौजो को जकडने के लिए,
 कोई जजीरे-गिराँ^२ काम नहीं आ सकती ।
 रकम^३ परती हुई फिरनो के तलाकुम की^४ ब्रसम,
 अर्मा ए-दहर पे^५ अब शाम नहीं छा सकती ।

(हसी मेनापो के जगत मीमा पार करने पर लिखी गई)



१ उच्च जातियो के २ बोझल जजीर ३ नृत्य ४ तूफान की
 ५ जीवन क्षेत्र पर

मेरे गीत तुम्हारे हैं

अब तक मेरे गीतों में उम्मीद भी थी पसपाई भी,
मौत के कदमों की आहट भी जीवन को अगड़ाई भी ।
मुस्तकबिल की किरने भी थी, हाल की वोभल जुलमत^१ भी,
तूफानों का शोर भी था और स्वावों की सहनाई भी ।

आज से मैं अपने गीतों में आतिशपाये^२ भर दूंगा,
मद्धम लचकीली तानों में जीवट-घारे भर दूंगा ।
जीवन के अन्धियारे पथ पर मशअल लेकर निकलूंगा,
घरती के फँले आचल में सुख सितारे भर दूंगा ।

आज से ऐ मजदूर किसानों ! मेरे राग तुम्हारे हैं,
फाकाकश इन्सानों ! मेरे जोग बिहाग तुम्हारे हैं ।
जब तक तुम भूखे नगें हो, ये शोले खामोश न होंगे,
जब तक बे-आराम हो तुम, ये नगमें राहत-कोश^३ न होंगे ।

मुझको इस का रज नहीं है लोग मुझे फनकार^४ न मानें,
फिक्रो-सुखन के^५ ताजिर मेरे शेरों को अशआर न मानें ।
मेरा फन^६, मेरी उम्मीदें, आज से तुम को अपन हैं,
आज से मेरे गीत तुम्हारे दुख और सुख का दपन है ।

तुमसे कुव्वत^७ लेकर अब मैं तुमको राह दिखाऊँगा,
तुम परचम^८ लहराना साथी मैं वरबत पर गाऊँगा ।
आज से मेरे फन का मकसद^९ जजीरें पिघलाना है,
आज से मैं शबनम के बदले अगारे घरसाऊँगा ।

१ घघेरा २ आग के टुकड़े ३ आनन्द-दायक ४ कलाकार
५ चितन और काव्य के ६ कला ७ शक्ति ८ भडा ९ उद्देश्य

म नहा ता क्या ?

मेरे लिए ये तकल्लुफ, ये दुख, ये हसरत क्यों
मेरी निगाहे - तलब^१ आखरी निगाह न थी
हयातजारे - जहा की^२ तबील^३ राहो मे
हजार दीदाए - हैरा^४ फूसू^५ बखेरेंगे
हजार चश्मे - तमना^६ बनेगी दम्ते - नवाल^७
निकल के खलवते - गम से^८ नजर उठाओ तो

वही शफक^९ है, वही जी^{१०} है, मे नहीं तो क्या ?

मेरे बगैर भी तुम कामियावे - इश्रत^{११} थी
मेरे बगैर भी आवाद थे निगात - कदे^{१२}
मेरे बगैर भी तुमने दिय जलाये हैं
मेरे बगैर भी देखा है जुलमतो का^{१३} नजूल^{१४}
मेरे न होने से उम्मीद का जिया^{१५} क्यों हो
बढी चलो मैं ए इश्रत के^{१६} जाम छलकाती
तुम्हारी सेज, तुम्हारे बदन के फूलो पर

उसी बहार का परती^{१७} है, मे नहीं तो क्या ?

१ इच्छुक नेत्र २ जीवन से परिपूर्ण सत्कार ३ दीघ ४ आश्चय
भरे नन ५ जादू ६ इच्छुक नेत्र ७ सवाली का हाथ ८ उदास एकांत
से ९ ऊप १० चमक ११ मुख वैभव में सफल १२ मनोरजन स्थल
१३ अघेरो का १४ उतरना (उमड़ना) १५ हानि १६ मुख बभब की
मदिरा के १७ प्रतिबिम्ब

मेरे लिए ये उदासी, ये सोग क्यों आखिर ?
 मलोह चेहरे^१ पे गर्दे - फुसुदंगी^२ कैसी ?
 वहारे - गाजा^३ से आरिज को ताजगी बखशो,
 अलील^४ आखी मे काजल लगाओ, रग भरो
 सियाह छूडे मे कलियो की कहकशा^५ गूधो
 हजार हापते सीने, हजार कापते लब
 तुम्हारी चश्मे - तवज्जोह के^६ मुन्तजिर हैं अभी
 जिलो मे^७ नग्मा - श्री - रगो - वहारो - तूर लिए
 हयात गर्मे - तगो - दौ^८ है, मै नही तो क्या ?



१ सलोन २ उदासी की धूल ३ पाउडर ४ कपोलों को ५ बीमार
 ६ आकाश-नगा ७ कृपा दृष्टि के ८ सग मे ९ भाग दोड म व्यस्त

खुदकुशी से पहले

उफ ये बेदर्द सियाही 'ये हवा के नीहे'^१,
 किसको मालूम है इस शव^२ की सहर^३ हो कि न हो ।
 इक नजर तेरे दरीचे की तरफ देख तो लू,
 डूबती आयो मे फिर तावे-नजर^४ हो कि न हो ॥

अभी रोशन है तेरे गम शबिस्ता के^५ दिये,
 नीलगू^६ पदों से छनती है शुआयें^७ अब तक ।
 अजनबी बाहो के हल्के मे^८ लचकती होगी,
 तेरे महके हुए वालो की रिदायें^९ अब तक ॥

सद होती हुई बत्ती के धूए के हमराह,
 हाथ फैलाए बढे आते हैं वोभल साये ।
 कान पीछे मेरी आखो के सुलगते आसू,
 कौन उलभे हुए वालो की गिरह सुलभाये ॥

आह ये गारे-हलाकत^{१०}, ये दिये का महबस^{११},
 उम्र अपनी इन्ही तारीक^{१२} मकानो मे कटी ।
 जिन्दगी फितरते - बेहिस की^{१३} पुरानी तकसीर^{१४},
 इक हकीकत थी मगर चद फमानो मे कटी ॥

कितनी आसाइशें^{१५} हसती रही ऐवानो मे^{१६},
 कितने दर मेरी जवानी पे सदा बढ रहे ।
 कितने हाथो ने चुना अतलसो - कमरवाघ मगर,
 मेरे मलबूस की^{१७} तकदीर मे पेवद रहे ॥

१ विलाप २ रात ३ सुबह ४ देखने की शक्ति ५ शयनागार
 के ६ नीलिमा मय ७ किरने ८ घेरे म ९ सटें १० विनाश की
 कदरा ११ बारागृह १२ अघेरे १३ निप्टुर प्रकृति की १४ अपराह
 १५ सुख संभव १६ महलो में १७ लिबास की

जुलम सहते हुए इन्सानो के इस मकतल मे^१,
कोई फर्दा के^२ तसव्वुर से^३ कहा तक बहले ?
उम्र भर रेंगते रहने की सजा है जीना,
एक दो दिन की अजीयत^४ हो तो कोई सह ले ॥

कही जुलमत^५ है फजाओ पे^६ अभी तक तारी^७,
जाने कब खत्म हो इन्सा के लहू की तकतीर^८,
जाने कब निखरे सियहपोश^९ फजा का जोवन ?
जाने कब जागे सितम-बुर्दा वशर की^{१०} तकदीर ॥

अभी रोशन है तेरे गम शबिस्ता के दिये,
आज मैं मौत के गारो मे उतर जाऊगा ।
और दम तोडती बत्ती के धुए के हमराह,
सरहदे - मर्गे - मुसलमल से^{११} गुजर जाऊगा ॥



१ बध-स्थल मे २ बल व ३ बल्पना से ४ कष्ट ५ अघेरा
६ वातावरण पर ७ छाया हुआ ८ बूँद-बूँद टपकना ९ काला (दु ख-भूण)
१० अत्याचार पीडित मनुष्य ११ निरंतर मृत्यु की सीमा से

फिर वही कुंजे-कफस १

चन्द लम्हो के लिए शोर उठा डूब गया,
कुहना^२ जजीरे - गुलामी की गिरह कट न सकी ।
फिर वही सैले-बला^३ है, वही दामे-ग्रमवाज ,
नाखुदाओ मे^४ सफीने की^५ जगह बट न सकी ॥

टूटते देखके देरीना तअत्तुल^७ का फुसू ,
नब्जे-उम्मीदे-वतन^८ उभरी, मगर डूब गई ।
पेशवाओ की^{१०} निगाहो मे तजब्जब^{११} पाकर
टूटती रात के साये मे सहर^{१२} डूब गई ॥

मेरे महबूब वतन ! तेरे मुकद्दर के^{१३} खुदा,
दस्ते-अगियार मे^{१४} किस्मत की इना^{१५} छोड गये ।
अपनी यक-तर्फा^{१६} सियासत के तकाजो के तुफैल,
एक वार और तुम्हे नौहा - वना^{१७} छोड गये ॥

फिर वही गोशा ए-जिदा^{१८} है वही तारीकी^{१९},
फिर वही कुहना सलासिल^{२०}, वही खूनी भक्तकार ।
फिर वही भूख से इन्सा की सितेजा-कारी^{२१},
फिर वही माओ के नौहे^{२२}, वही बच्चो की पुकार ॥

१ पिजर का कोना

“फिर वही कुंजे-कफस फिर वही मयाद का घर”

२ पुरानी ३ आपत्तियों का तूफान (आधिक्य) ४ सहरों का जाल
५ नावकों मे ६ नौवा की ७ पुराना गत्यवरोध ८ जादू ९ देग की
भाशा की नब्ज १० नेताओं की ११ असमजस १२ सुबह १३ भाग्य क
१४, गैरो के हाथ मे १५ बागडोर १६ एक पत्नीय १७ आतनाद करते
हुए १८ जेल का कोना १९ अघेरा २० पुरानी जजीरें २१ खूभना
२२ विलाप

तेरे रहबर^१ तुझे मरने के लिए छोड़ चले,
अर्ज-वगाल^२ । इन्हे डूबती सासो से पुकार ।
बोल चटगाव की मजलूम खमोशी । कुछ बोल,
बोल ऐ पीप से रिसते हुए सीनो की बहार ।

भूख और कहत के तूफान बढे आते है,
बोल ऐ इस्मतो इफफत के^३ जनाजो की कतार ।
गोक इन लौटते कदमो को, इन्हे पूछ ज़रा,
पूछ ऐ भूख से दम तोडते ढाचो की कतार ॥

जिदगी जन्न के साचे मे ढलेगी कब तक ?
इन फजाओ मे अभी मौत पलेगी कब तक ?

(शिमला काफ़ेस की असफलता पर लिखी गई)



श्रशआर

नफस के^१ लोच मे रम^२ ही नही, कुछ और भी है
 हयात^३ सागरे-सम^४ ही नही, कुछ और भी है
 तेरो निगाह मेरे गम की पासदार^५ सही
 मेरी निगाह मे गम ही नही कुछ और भी है
 मेरी नदीम^६ । मोहब्बत की रिफअतो से^७ न गिर
 बुलद, वामे-हरम^८ ही नही, कुछ और भी है
 ये इज्तिनाब है अक्से - शऊरे - महबूबी^{१०}
 ये एहतियात^{११}, सितम ही नही, कुछ और भी है
 इधर भी एक उचटती नजर, कि दुनिया मे
 फरोगे-महफिले जम^{१२} ही नही, कुछ और भी है
 नये जहान वसाये है फिक् - आदम ने^{१३}
 अब इस जमी पे इरम^{१४} ही नही कुछ और भी है

१ स्वासो के २ जाने का सकेत ३ जीवन ४ विप का सागर ५ लिहाज
 रखने वाली ६ साथी ७ ऊँचाइयों से ८ ऊचा स्थान केवल हरम-सराय
 की छत (ही नही) ९ विमुक्तता १० तुम्हे अपने प्रेयसी होने के जान का
 प्रतिबिम्ब ११ सावधानी १२ बादगाह (जमशैद) की महफिल का उरवान
 १३ मानव चित्त ने १४ स्वग

नूरजहा के मजार पर

पहलुए - शाह मे^१ ये दुखनरे - जमहूर की^२ कब्र,
कितने गुमगस्ता फसानो का^३ पता देती है।
कितने खूरेज हकायक से^४ उठाती है नकाब,
कितनी कुचली हुई जानो का पता देती है ॥

कैसे मगरूर शहनशाहो की तसकी के लिए,
सालहा - साल हसीनाओ के बाजार लगे।
कैसी बहकी हुई नजरो के तमय्युश^५ क लिए,
सुख महला म जवा जिस्मो के अवार लगे ॥

कैसे हर शाख से मुह-बद महकती कलिया,
नोच ली जाती थी तजइने - हरम^६ की खातिर।
और मुर्झा के भी आजाद न हो सकती थी,
जिल्ले-मुवहान की^७ उल्फन के भरम की खातिर ॥

कैसे इक फर्द के^८ हटो की जरा सी जुबिश,
सर्द कर सकती थी वेलीस^९ वफाओ के चिराग।
लूट सकती थी दमकते हुए माथो का सुहाग,
तोड सकती थी मये-इश्क से^{१०} लवरेज अयाग^{११} ॥

१ बादशाह की बगल में २ जनता की बेटी की ३ भूली बिसरी
कहानिया का ४ रक्तिम घटनाओ से ५ विलास ६ हरम की शोभा
७ बादशाह ८ व्यक्ति के ९ निष्काम ११ प्रेम-रूपी मदिरा से १२ भरे
हुए प्याले

सहमी-सहमी सी फजाओ मे ये वीरा मरकद^१,
इतना खामोश है, फरियाद - कुना^२ हो जैसे ।
सर्द शाखो मे हवा चीख रही है ऐसे,
रूहे - तकदीसो - वफा^३ मसियाल्वा^४ हो जैसे ॥

तू मेरी जान ! मुझे हैरतो - हसरत^५ से न देख,
हम मे कोई भी जहानूरो - जहागीर नहीं ।
तू मुझे छोड के ठुकरा के भी जा सकती है,
तेरे हाथो मे मेरे हाथ हैं, जजीर नहीं ॥



१ कब्र २ न्याय की दुहाई दे रहा हो ३ प्रेम तथा पवित्रता की आत्मा
४ विलाप कर रही हो ५ आश्चय और उत्कठा

इनकी मेहनत भी मेरी, हासिले-मेहनत^१ भी मेरा,
 इनके बाजू भी मेरे, कुब्बत-बाजू^२ भी मेरी ।
 मैं खुदावद^३ हू इस बुसअते - बेपाया का^४,
 मौजे-आरिज^५ भी मेरी, नकहते-नेसू^६ भी मेरी ॥

मैं उन अजदाद का बेटा हू जिन्होंने पैहम^७,
 अजनबी कौम के साये की हिमायत की है ।
 गदर की साअते-नापाक से^८ लेकर अब तक,
 हर कडे वक़्त में सरकार की खिदमत की है ॥

खाक पर रँगने वाले ये फमुर्दा^९ ढाचे,
 इनकी नज़रें कभी तलवार बनी हैं न बने ।
 इनकी गैरत पे हर इक हाथ झपट सकता है,
 इनके अबरू की^{१०} कमालें न तनी है न तनें ॥

हाए ये शाम, ये भरने, ये शफक की लाली,
 मैं इन आसूदा फज़ाओ में^{११} ज़रा भूम न लू ?
 वो दबे पाँव उधर कौन चली जाती है ?
 बढके उस शोख के तरसो हुए लव चूम न लू ?

१ परिश्रम का फल २ बाँहों की शक्ति ३ भगवान ४ अतीव विनालता
 ५ कपोलों की (म पदा होने वाली) लहरें ६ केशों की मुगध ७ निरतर
 ८ अशुभ क्षण ९ गिथिल १० श्रुति की ११ आनन्द-व्यथक घातावरण में

मादाम

आप वे-वजह परीशान-सी क्यों है मादाम^१ ?
 लोग कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते होंगे ।
 मेरे अहबाब ने^२ तहजीब न सीखी होगी,
 मेरे माहौल में^३ इन्सान न रहते होंगे ॥

नूरे-सर्माया से^४ है रूप-तमद्दुन की^५ जिला^६,
 हम जहा है वहा तहजीब नहीं पल सकती ।
 मुफिलसी हिंस-ए-लताफत को^७ मिटा देती है,
 भूस आदाब के^८ साचों में नहीं ढल सकती ॥

लोग कहते हैं तो लोगो पे तअज्जुब कैसा ?
 सच तो कहते हैं कि नादारो की^९ इज्जत कैसी ?
 लोग कहते हैं—मगर आप अभी तक चुप है,
 आप भी कहिये गरीबो में शराफत कैसी ?

नेक मादाम ! बहुत जल्द वो दीर आयेगा,
 जब हम जीस्त के अदवार^{१०} परखने होंगे ।
 अपनी जिल्लत की वसम, आपकी अजमत की^{११} वसम,
 हम को ताअजीम के^{१२} मेअर^{१३} परखने होंगे ॥

१ 'मैडम' का उद्गू रूपांतर २ मित्रों में ३ वानावरण में ४ पूँजी के प्रकार से ५ सम्पत्ता के चेहरे की ६ धमक ७ कोमलता के भाव को ८ निपटता ९ निधनों की १० जीवन के युग ११ महानता की १२ सिंहाचार के १३ आदस या मापदंड

हम ने हर दौर^१ में तजलील^२ सही है लेकिन,
 हम ने हर दौर के चेहरे को जिया^३ बरशी है ।
 हम ने हर दौर में मेहनत के सितम भेले है,
 हम ने हर दौर के हाथों को हिना^४ बरशी है ॥

लेकिन इन तत्ख मुवाहिस् से^५ भला क्या हासिल ?
 लोग कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते होंगे ।
 मेरे ग्रहबाव ने तहजीब न सीखी होगी,
 मैं जहा हू वहा इ-सान न रहते होंगे ॥



ये किसका लहू है, कौन मरा ?

ऐ रहवरे - मुल्को - कौम बता

ये किसका लहू है, कौन मरा ?

ऐ अजमे - फना^१ देने वालो, पैगामे-बका^२ देने वालो !

अब आग से कतराते क्यो हो, शोलो को हवा देने वालो !

तूफान से अब क्यो डरते हो, मौजो को^३ मदा^४ देने वालो !

क्या भूल गये अपना नारा ?

ऐ रहवरे - मुल्को - कौम बता

ये किसका लहू है, कौन मरा ?

समझीते की उम्मीद सही, सरकार के वायदे ठीक सही

हा मद्दके-सितम^५ अफमाना सही, हा प्यार के वायदे ठीक सही

अपनो के कलेजे मत छोदो, अगियार के^६ वायदे ठीक सही

जमहूर से^७ यू दामन न छुडा

ऐ रहवरे मुल्को - कौम बता

ये ' किसका लहू है, कौन मरा ?

हम ठान चुके है अब जी म हर जालिम से टकरायेंगे

तुम समझीते की आस रखो, हम आगे बढ़ते जायेंगे

हर मजिले-आजादी की कसम, हर मजिल पे दोहरायेंगे

ये किसका लहू है, कौन मरा ?

ऐ रहवरे - मुल्को - कौम बता

ये किसका लहू है, कौन मरा ?

१ मृत्यु का सकल्प २ जीवन-सदेग ३ लहरा को ४ आवाज
५ अत्याचार का धम्यास ६ गैरों के ७ जनता से

मफाहमत^१

नशेबे - अज्र पे^२ ज़रों को मुश्तअल^३ पाकर,
बुलदियो पे सफेद औ^४ मियाह^५ मिल ही गये ।
जो यादगार थे वाहम^६ सितेजावारो की^७,
व-फैजे-ववत^८ वो दामन के चाक सिल ही गये ॥

जिहाद^९ सत्तम हुआ, दोरे - गाशती^{१०} आया,
सभल के बँठ गये महमिलो मे^{११} दीवाने ।
हुजूमे - तिश्नालबा^{१२} की^{१३} निगाह से ओभल,
भलक रहे हैं शराबे - हवस^{१४} के पैमाने ॥

ये जदन, जश्ने - मसरत^{१५} नहीं, तमाशा है,
नये लियास मे निकला है रहजनी का^{१६} जुलूस ।
हजार शम्मए - उखुवत^{१७} बुभाके चमके है,
ये तीरगी के^{१८} उभारे हुए हसी फानूस ॥

ये शाखे - नूर^{१९} जिसे जुलमतो ने^{२०} सीचा है,
अगर फली तो शरारो के फूल लायेगी ।
न फल सकी तो नई फस्ले-गुल के^{२१} आने तक,
जमीरे - अज्र मे^{२२} इक जहर छोड जायेगी ॥

(बम्बई, १५ अगस्त १९४७—स्वतंत्रता दिवस)

१ समझौता २ धरती की डलान पर ३ उत्तेजित ४ गोरे और
धाले ५ परस्पर ६ लडाईं भगडे की ७ समय की कृपा से (के कारण)
८ धम युद्ध ९ मित्रता का युग १० ऊटो के बजावो म (सला मजनु के
विस्से की ओर सकत है।) ११ प्यासो के गिरोह की १२ लोलुपता रूपी
शराब १३ खुशी का उत्सव १४ डाका मारने का १५ मानव समानता के
दीपक १६ अघकार के १७ प्रकाश की शाखा १८ अघेरों ने १९ वसन्त
ऋतु के २० धरती की आत्मा

आज

साथियो ! मैंने बरसो तुम्हारे लिए
 चाद, तारो बहारो के सपने बुने
 हुस्न और इश्क के गीत गाता रहा
 आरजूओ के^१ ऐवा^२ सजाता रहा
 मैं तुम्हारा मुगनी , तुम्हारे लिए
 जब भी आया ये गीत लाता रहा
 आज लेकिन मेरे दामने-चाक मे^४
 गर्दे-राहे-सफर के^५ सिवा कुछ नहीं
 मेरे बरबत के^६ सीने में नग्मो का दम घुट गया है
 ताने चीखो के अवार में दब गई हैं
 और गीतो के सुर हिचकिया बन गये हैं
 मैं तुम्हारा मुगनी हूँ, नग्मा नहीं हूँ
 और नग्मे की तखलीक का^७ साजो-सामाँ
 साथियो ! आज तुमने भसम कर दिया है
 और मैं—अपना टूटा हुआ साज थामे
 सद लाशो के अवार को तक रहा हूँ
 मेरे चारो तरफ मौत की बहशतें नाचती हैं
 और इन्सान की हैवानियत जाग उठी है
 बवरियत^८ के खूबवार इफरीत^९
 अपने नापाक जबडो को खोले

१ आकाशमो के २ महल ३ गायक ४ फटी हुई भोली में ५ यात्रा
 के भाग की धूलि ६ वाजे के ७ रचना का ८ बबरता ९ हिंसक देव

खून पी-पीके गुर्ग रहे है
 बच्चे माओ की गोदो मे सहमे हुए है
 इस्मते^१ सर-बरहना^२ परीशान हैं
 हर तरफ शोरे-आहो बुका^३ है
 और मे डम तवाही के तूफान मे
 आग और खून के हेजान^४ मे,
 सरनिगू^५ और शिकस्ता मकानो के मलबे से पुर रास्ता पर
 अपने नग्मो की भोली पसारे
 दर-दर फिर रहा हू
 मुझको अमन और तहजीब की भीख दो
 मेरे गीतो की लै, मेरे मुग मेरी नै^६
 मेरे मजरूह^७ होटा को फिर माप दो
 साथियो ! मैने वरसो तुम्हारे लिए
 इकलाव और वगावत के नग्मे अलापे
 अजनबी राज के जुल्म की छाव मे
 सरफरोशी के^८ रवाबीदा जज्वे^९ उभारे
 और उम सुबह की राह देखी
 जिसमे इस मुल्क की रह आजाद हो
 आज जजीरे-महकूमियत^{१०} कट चुकी है
 और डम मुल्क के वहरो वर^{११} वामो दर^{१२}
 अजनबी कौम के जुल्मत अफशा फरेरे^{१३} की मनहूस
 छाओ से आजाद है
 खेत सोना उगलने को बेचैन हैं

१ मतीत्व २ सिर से पर तक नगी ३ आतनाद ४ प्रचडता
 ५ मिर झुनाए ६ वासुरी [७ घायल ८ सिर बेचने (मरने) के ९ सोई
 हुई भावनायें १० परतनता की जजीर ११ सागर और धरती १२ छतें
 और दरव जे १३ अघकार फैजात हुए ऋड

वादियाँ लहलहाने को वेताव है
 कोहसारो के^१ सीने में हेजान^२ है
 सग और खिश्त^३ बेरवात्रो-बेदार^४ हैं
 उनकी आखो में तामीर के^५ रवाव हैं
 उनके रवावो को तकमील का^६ रूप दो
 मुल्क की वादिया, घाटिया, खेतिया
 औरतें, वच्चिया—

हाथ फँसाए खैरात की^७ मुन्तजिर^८ है
 उनको अमन और तहजीब की भीख दो
 माओ को उनके होटो की शादाबिया
 नन्हे वच्चो को उनकी खुशी बरश दो
 मुल्क की रूह को जिन्दगी बरश दो
 मुझको मेरा हुनर^९, मेरी लै बरश दो
 मेरे सुर बरश दो, मेरो नै बरश दो
 आज सारी फजा^{१०} है भिग्यारी
 और मैं इस भिखारी फजा में
 अपने नग्मो को भोली पसारे
 दर-व-दर फिर रहा हूँ
 मुझको फिर मेरा खोया हुआ साज दो
 मैं तुम्हारा मुगनी, तुम्हारे लिए
 जब भी आया, नये गीत लाता रहूँगा ।

(११ सितम्बर १९४७—आकाश वाणी, दिल्ली)

१ पवत मालामो के २ प्रचड़ता ३ पत्थर और इंट ४ जागे हुए
 ५ निर्माण या उसारी के ६ पूति का ७ भीख की ८ प्रतीक्षा कर
 रही हैं ९ बला १० घातावरण

राजल

तरवज्जारो पे^१ क्या वीती, सनमखानो पे^२ क्या गुजरी ?
 दिले-जिन्दा^३ ! तेरे मरहूम^४ अरमानो पे क्या गुजरी ?
 जमी ने खून उगला, आत्ममा ने आग बरसाई,
 जब इन्सानो के दिन बदले तो इन्सानो प क्या गुजरी ?
 हमे ये फिक्र, उनकी अजुमन^५ किस हाल मे होगी,
 उन्हे ये गम कि उनसे छुट के दोवानो पे क्या गुजरी ।
 मेरा इत्हाद^६ तो खैर एक लानत था सो है अब तक ।
 मगर इस आलमे-बहशत म^७ ईमानो प क्या गुजरी ?
 ये मन्जर कौन-सा मन्जर है पहचाना नही जाता ।
 सियह खानो^८ से कुछ पूछो, शविस्तानो^९ पे क्या गुजरी ?
 चलो वो कुफ्र^१ के घर से सलामत आ गये, लेकिन ।
 खुदा की मुम्लकत मे^{११} सोरता जानो^{१२} पे क्या गुजरी ?

(पाकिस्तान)

१ श्रीडा स्थलो पर २ मदिरो पर ३ जीवित हृदय ४ मृत
 ५ महफिल ६ नास्तिकता ७ बबरता की स्थिति मे ८ अंधेरे घरो
 (खडहरों) से ९ शयनागारो पर १० काफिरो की बस्ती के ११ राज्य मे
 १२ जली हुई आत्माओ (जीवो) पर

नया सफर है, पुराने चिराग गुल कर दो ।

फरेवे - जन्तते - फर्दा के^१ जाल टूट गये,
हयात^२ अपनी उमीदो पे शमसार^३ सी है।
चमन मे जशने बुरुदे बहार^४ हो भी चुका,
मगर निगाहे - गुलो - लाला^५ सोगवार^६ सी है ॥

फजा^७ में गम बगूलो का रक्स^८ जारी है,
उफक पे^९ खून की मीना^{१०} छलक रही है अभी ।
कहा का मेहरे - मुनवर^{११}, कहा की तनवीरें^{१२}
कि वामो दर पे^{१३} सियाही झलक रही है अभी ॥

फजायें^{१४} मोच रही है कि उन्ने - आदम ने^{१५},
खिरद^{१६} गवावे, जुनू^{१७} आजमाके क्या पाया ?
वही शिक्स्ते-तमन्ना^{१८}, वही गमे-अय्याम^{१९},
निगारे-जीस्त^{२०} ने सब कुछ लुटाके क्या पाया ?

भटक के रह गईं नजरे खला^{२१} की बुरसअत^{२२} म,
हरीमे-शाहिदे-रअना^{२३} का कुछ पता न मिला ।
तवील राहगुजर^{२४} खत्म हो गई, लेखिन,
हनोज^{२५} अपनी मुमाफन ना^{२६} मुतहा^{२७} न मिला ॥

१ भविष्य व स्वर्ग के धोले के २ जीवन ३ सज्जित ४ वसत के
आगमन का उत्सव ५ फूलों की नजर ६ उदास ७ वातावरण ८ नृत्य
९ क्षितिज पर १० मुराही ११ दीप्त मूरज १२ उजाल १३ घत
घोर दरवाजे पर १४ वातावरण १५ मानव जाति न १६ बुद्धि
१७ उमा १८ आगा का टूटना १९ सामारिक दुःख २० जीवन की
गुदरी २१ भूय २२ विनाशता २३ मुर्र प्रेममी का रनिवाग
२४ माग २५ अभी तक २६ यात्रा का २७ घत (मंजिल)

सफर-नसीब रफीको^१ । कदम बढाए चलो,
पुराने राहनुमा^२ लौट कर न देखेंगे ।
तुलूए - मुमह^३ से तारो की मौत होती है,
शबो^४ के राज - दुलारे इधर न देखेंगे ॥



शिकस्ते-जिन्दा^१

[उस चीनी शायर को—जिम्ने चियागकाई शैक की जेल में लिखा "बीस साल कैद ! कागज के एक पुर्जे पर लिखे हुए कुछ लपटों के छुम में हो सकता है मैं बीस साल तक सूरज की शकल न देख सकूँ। लेकिन क्या तुम्हारा यह गला सड़ा निजाम जो हर घड़ी बिजली की सी तेजी के साथ अपनी मौत की तरफ बढ़ रहा है, बीस साल तक बाकी रह सकेगा ?]

खबर नहीं कि बलाखाना - ए - सलासिल में^२
तेरी हयाते - सितम - आशना पे^३ क्या गुजरी
खबर नहीं कि निगारे सहर की^४ हसरत में
तमाम रात चिरागे - वफा पे^५ क्या गुजरी

मगर वो देख फजा में^६ गुवार-सा उट्टा
वो तेरे सुख जवानों के राहवर^७ आए
नजर उठा कि वो तेरे बदन के मेहनतकश^८
गले से कुहना^९ गुलामी का तौक^{१०} उतार आए

उफक पे^{११} सुबहे-प्रहारा का^{१२} आमद-आमद^{१३} है
फजा में सुख फरेरो के^{१४} फूल खिलते हैं
जमीन खदा-ब-लव है^{१५} शफीक^{१६} मा की तरह
कि इसकी गोद में विछड़े रफीक^{१७} मिलते हैं

१ कारागार का टूटना २ कारागार रूपी विपत्तिगृह ३ अत्याचार से परिचित जीवन (जिस पर अत्याचार हुए हैं) ४ प्रभात की सुदरी ५ वफा रूपी दीपक ६ वातावरण में ७ छोटे ८ थमजीवी ९ पुरानी १० पटा ११ क्षितिज पर १२ बसंत का प्रभात १३ आगमन १४ भड़ों १५ मुस्करा रही है १६ ममताभरी १७ साथी

गिकस्ने-महवस-भो-जिदा^१ का वनत आ पहुचा
 यो तेरे नाव हरीरत मे डाल आये हैं
 नजर उठा कि तेरे देग की फजाआ पर
 गई बहार गई जनतो के साथे हैं

दगीदा तन^२ है वो कहुवा ए मीमो-जर^३ जिमरो
 बहून ममान के लागे थे गानिगने-बुहन^४
 रवाव^५ छेड, गजल-ह्या हो^६, रवग-फर्मा हो^७
 कि जश्ने-नुसरने मेहनत^८ है जश्ने-नुसरते फा^९

मैं तुम्ह से दूर नहीं लेकिन ए रफीक^{१०} मेरे
 तेरी बफा की मेरी जहदे-मुस्तबिल^{११} का सताम
 तेरे वता गो, तरी अजें - वा - हमीयत को^{१२}
 धउकने चीलते हिन्दोस्ता के दिल का सलाम



१ कारागारी और य दीधरा क दूने का २ भग दारीर ३ पूजी
 (साम्राज्य) की वेश्या ४ पुराने जुवारी ५ मात्र ६ गीत गाओ ७ गृत्य
 करो ८ अम की विजय का उत्सव ९ बला की विजय का उत्सव
 १० साथी ११ स्थायी मध्य १२ गौरवशील धरती की

लहू नज़्र^१ दे रही है हयात^२ ।

मेरे जहा मे समनज़ार^३ ठूडने वाले
यहा बहार नही आतशी बगूले^४ हैं
धनुक के रग नही, सुरमई फिज़ाओ मे
उफक से ता-ब-उफक^५ फासियो के भूले हैं

फिर एक मजिले-खू-वार^६ की तरफ है रवा^७
वो रहनुमा^८ जो कई बार राह भूले हैं

बुलद दावा - ए - जमहूरियत^९ के पर्दे मे
फरोगे महन्नस-ओ-जिदा^{१०} है, ताजियाने^{११} हैं
ब गामे-अम्न^{१२} है जगो-जदल के मनसूवे
ब शोरे-अद्न^{१३}, तफाबुत के^{१४} कारखाने हैं

दिलोप खीफके पहरे, लबोपे^{१५} कुपले सुक़त^{१६}
सिरो पे गर्म सलाखो के शामियाने है

मगर मिटे है कही जन्न और तशद्दुद से^{१७}
वो फल्सफे कि ज़िला^{१८} दे गये दिमागो को
कोई सिपाहे-सितमपेशा^{१९} चूर कर न सकी
बशर की^{२०} जागी हुई रूह के अथागो का^{२१}

१ भेंट २ जि दगी ३ उपवन ४ अग्नि बवडर ५ क्षितिज से
क्षितिज तक ६ लहू बिखरनी मजिल ७ चल रहे हैं ८ पय प्रदत्तक
९ जनतय के ऊचे दावे १० कारागारों का उत्थान ११ कीडे १२ शक्ति
के नाम पर १३ गाय के शोर के साथ १४ भेद भाव १५ होटो पर
१६ चुप्पी के ताले १७ हिमा से १८ चमक १९ जालिम सेना
२० मानव की २१ पाओ की

कदम-कदम पे लहू नज़ दे रही है ह्यात
 सियाहियो से उलभते हुए चिरागो को
 रवां है काफला ए-इतिका ए इन्सानी^१
 निजामे-आतिशो आहन का^२ दिल हिलाये हुए
 बगावतो के दुहल^३ वज रहे हैं चार तरफ
 निकल रहे है जवां मशअलें जलाये हुए
 तमाम अर्जे जहा^४ खीलता समुन्दर है
 तमाम कोहो-बयावां^५ हैं तिलमिलाये हुए
 मेरी सदा^६ को दबाना तो खैर मुमकिन है
 मगर ह्यात की ललकार कौन रोकेगा
 फसीले आतिशो आहन^७ बहुत बुलद सही
 बदलते वक्त की रफ्तार कौन रोकेगा
 नये खयाल की परवाज^८ रोकने वालो
 नये अवाम की तलवार कौन रोकेगा
 पनाह लेता है जिन महबसो की^९ तीरा निजाम
 वही से सुबह के लशकर निकलने वाले है
 उभर रहे है फजाओ म अहमरी^{१०} परचम^{११}
 किनारे मशरिको मगरिव के मिलने वाले है
 हजार बब^{१२} गिरे लाख आधिया उट्ठे
 वो फूल खिल के रहेगे जो खिलने वाले है

१ मानव विकास का काफला २ आग और लोहे के राज्य का ३ ढोल
 ४ ससार (की धरती) ५ पवत, जगल ६ आवाज ७ लोह और आग
 की फसीत (प्राचीर) ८ उडान ९ कारागारो की १० सुख
 ११ ऋडे १२ विजली

आवाजे-आदम

दवेगी कव तलक आवाजे-आदम^१ हम भी देखेंगे
 रुकेगे कव तलक जज्जते-जरहम^२ हम भी देखेंगे
 चलो सू ही सहो ये जोरे-पैहम^३ हम भी देखेंगे
 दरे - जिंदा से^४ देखें, या उरुजे - दार से^५ देखें
 तुम्हे रुमवा सरे - बाजारे - आलम^६ हम भी देखेंगे
 जरा दम लो मआले-शौकते-जम^७ हम भी देखेंगे
 व-जोमे - कुव्वते - फौलादो - आहन^८ देख लो तुम भी
 ब-फैजे - जज्वा - ए - ईमाने - मोहकम^९ हम भी देखेंगे
 जधीने-ऊज-कुलाही^१ खाक पर खम^{११} हम भी देखेंगे
 मुकाफाते-अमल^{१२}, तारीख की कुहना^{१३} रिवायत^{१४} है
 करोगे कव तलक नावक^{१५} फराहम^{१६}, हम भी देखेंगे
 कहा तक है तुम्हारे जुम मे दम हम भी देखेंगे
 ये हगामे विदा ए-शव^{१७} है, ऐ जुनमत के^{१८} फरज्ज-दो^{१९}
 सहर के^{२०} दोश पर^{२१} गुलनार परचम^{२२} हम भी देखेंगे
 तुम्हे भी देखना होगा यह आलम^{२३}, हम भी देखेंगे
 (पाकिस्तान म प्रगतिशील लेखका, शायरो
 और पत्रकारो की गिरफ्तारी पर)

१ मानव की आवाज १ प्रचंड भावनायें ३ निरंतर अत्याचार
 ४ कारागार के द्वार से ५ सूलियों की ऊचाई से ६ ससाररूपी बाजार म
 ७ बादशाही ठाठ का अंतिम त्रियाकम ८ लोहे की शक्ति क घमड पर
 ९ हृद विश्वास के भाव की कृपा से १० टेढ़ी टोपिया (ताज) रखने वाले
 माथे ११ झुके हुए १२ कर्मों का बदला (किये की सजा) १३ पुरानी
 १४ परम्परा १५ तीर १६ इकट्ठे करना १७ रात के जाने की
 घड़ी १८ अधिकार के १९ बेटो २० सुबह के २१ कंधे पर २२ गुलाबी
 भडा २३ हालत

सजल

जब कभी उनकी तवज्जोह म कमी पाई गई

अज - सरे - नो^१ दास्ताने - गोक^२ दोहराई गई

विक्र गये जवनेरे लव^३ फिर तुझकी क्या शिक्वा, अगर

जिन्दगानी वादा - ओ - सागर से^४ वहलाई गई

ऐ गमे-दुनिया तुझे क्या इल्म^५ तेरे वास्ते

किन वहानो से तवीमत राह पर लाई गई

हम करें तर्क-बफा^६, अच्छा चलो यूही सहो

और अगर तर्क-बफा से भी न रसवाई गई

कसे-कैसे चरमो-गारिज^७ तर्द - गम से^८ बुझ गये

कैसे - कैसे पैकरो की^९ शाने - जेनाई^१ गई

दिल की धडकन म तवाज्जन^{११} आ चला है, खैर हो

मेरी नजरें बुझ गई या तेरी रअनाई^{१२} गई

उनका गम उनका तमज्बुर^{१३} उनके शिकवे अत्र वहा

अब तो ये बातें भी ऐ दिल ! हो गईं ग्राई - गई

जुरते इन्सा पे^{१४} गो तादोव के^{१५} पहरे रहे

फितरते - इन्सा को^{१६} तब जजीर पहनाई गई

अर्सा ए-हस्ती म^{१७} अब तेशाज्जनो^{१८} का दौर है

रस्मे - चगेजी^{१९} उठी, लौकीरे - दाराई^{२०} गई

१ नये सिरे से २ प्रेम कथा ३ हाट ४ शराव और प्याले में ५ ज्ञान
 ६ प्रेम का परित्याग ७ नत्र और कपोल ८ गम की धूल से ९ गरीरा
 (सुदरियो) की १० शृंगार की शान ११ सनुलन १२ सौदय १३ कल्पना
 १४ मानव साहम १५ शिक्षण रूपी दड के १६ मानव प्रकृति को १७ सतार
 रूपी क्षेत्र म १८ कुदाल वाला का, अर्थात् श्रमजीवियों का (फरहाद की ओर
 संकेत है) १९ चगेज ऐमे (अत्याचारी) राजाओं की नीति २० वादशाही
 सम्मान

मत्ताअ ए गर^१

मेरे रवाबो के भरोको को सजाने वाली
तेरे रवाबो मे कही मेरा गुजर है कि नही
पूछकर अपनी निगाहो से बता दे मुझको
मेरी राहो के मुकद्दर मे^२ महर^३ है कि नही

चार दिन की य रफाकत^४ जो रफाकन भी नही
उम्र भर के लिए आजार^५ हुई जाती है
जिन्दगी यू तो हमेशा से परीशान मी थी
अब तो हर सास गिराजार^६ हुई जाती है

मेरा उजडी हुई नीदो के शबिस्तानो मे^७
तू किसी रवाब के पैकर^८ की तरह आई है
कभी अपनी सी, कभी गैर नजर आती है
कभी इखलास^९ की मूरत कभी हरजाई है

प्यार पर बस तो नही है मेरा, लेकिन फिर भी
तू बतादे कि तुझे प्यार कर या न कर
तूने खुद अपने तबस्सुम से^{१०} जगाया है जिहे
उन तमनाओ का इजहार कर या न कर

तू किसी और के दामन को कली है लेकिन
मेरी रात तेरी खुशबू से बमी रहती है
तू कही भी हो तेरे फूल से आरिज की^{११} कसम
तेरी पलके मेरी आखो पे भुकी रहती हैं

१ गर की सम्पत्ति २ भाग्य मे ३ प्रमात ४ शाय ५ रोग ६ अमरु
७ शयनागारो मे ८ आकार ९ नि स्वाधता (प्रभ) १० मुस्कराहट स
११ गाला की

तेरे हाथों की हारारत^१, तेरे सासों की महक
तैरती रहती हैं एहसास की^२ पहनाई मे^३
ढूँढनी रहती हैं तखईल की^४ बाहें तुम्हको
सद रातों की सुलगती हुई तनहाई म

तेरा अल्लाफो-करम^५ एक हकीकत^६ है मगर
ये हकीकत भी हकीकत म फमाना^७ ही न हो
तेरी मानूम निगाहों का^८ ये मोहतात पयाम
दिल के ख करने का इक और बहाना ही न हो

कौन जान मेरे इमरोज का^९ फर्दा^{१०} क्या है
कुरबतों^{११} बढ के पक्षेमान^{१२} भी हो जाती है
दिल के दामन से लिपटनी हुई रगी नजरें
देखते - देखते अनजान भी हो जाती है

मेरी दरमादा^{१३} जवानी की तमन्नाआ के
मुजमहिल^{१४} रजाव की तावीर^{१५} बनादे मुम्हको
तेरे दामन मे गुलिस्ता भी है वोराने भा
मेरा हासिल^{१६} मेरी तकदीर बतादे मुम्हको



१ गर्मी २ चेतना की ३ विस्तीर्णता म ४ कल्पना की ५ दृषा,
अनुकम्पा ६ वास्तविकता ७ कहानी ८ प्रेम युक्त नज़्म का ९ आज का
१० कल ११ सामीप्य, प्रेम १२ लज्जित १३ निवश १४ आकृत
१५ स्वप्न-मल १६ प्राप्ति

तेरी आवाज

रात मुनसान थी, वोभल थी फजा की^१ सासँ
 रूह पे छाए थे वेनाम गमो के साये
 दिल को ये जिद थी कि तू आए तसल्ली देने
 मेरी कोशिश थी कि कमबख्त को नीद आ जाये
 देर तक आसो मे चुभती रही तारो की चमक
 देर तक जहन^२ सुलगता रहा तनहाई मे
 अपने ठुकराये हुए दोस्त की पुरसिश्^३ के लिए
 तू न आई मगर इस रात की पहनाई^४ मे
 यू अचानक तेरी आवाज कही से आई
 जैसे परबत का जिगर चीर के भरना फूटे
 या जमीनो की मोहब्बत म तडप कर नागाह^५
 आसमानो से कोई शोख सिताग टूटे
 शहद-सा घुल गया तल्लावा - ए - तनहाई मे^६
 रग-सा फैल गया दिल के सियाह खाने मे^७
 देर तक यू तेरी मस्ताना सदाएँ^८ गूजी
 जिस तरह फूल चमकने लगें वीराने म
 तू बहुत दूर किसी अजुमने - नाज^९ म थी
 फिर भी महसस किया मैने कि तू आई है
 और नग्मो म छुपाकर मेरे सोये हुए स्वाव
 मेरी छठी हुई नीदो को मना लाई हैं

१ वातावरण की २ मस्तिष्क ३ हाल चाल पूछना ४ विगलता
 ५ सहना ६ एकात क कडवेपन म ७ अघेरे घर म ८ आवाजें
 ९ नाजों भरी महफिल

रात की सतह पे^१ उभरे तेरे चेहरे के नुकूश^२
 वही चुपचाप-सी आखे, वही सादा सी नजर
 वही ढलका हुआ आचल, वही रफतार का स्रम^३
 वही रह-रह के ताचकता हुआ नाजुक पैकर^४
 तू मेरे पास न थी फिर भी सहर^५ होने तक
 तेरा हर साम मेरे जिस्म को छूकर गुजरा
 कतरा-कतरा तेरे दीदार^६ की शबनम टपकी
 लम्हा - लम्हा^७ तेरी खुशबू से मुअत्तर^८ गुजरा
 अब यही है तुझे मन्जूर तो ऐ जाने-बहार^९
 मैं तेरी राह न देखूंगा सियाह रातो म
 ढूढ लेगी मेरी तरसी हुई नजरे तुझ को
 नग्मा - ओ - शेर की उमडी हुई वरसाता म
 अब तेरा प्यार सतायेगा तो मेरी हस्ती
 तेरी मस्ती भरी आवाज मे ढल जायेगी
 और ये रूह जो तेरे लिए बेचैन सी है
 गीत बनकर तेरे होटो पे मचता जायेगी
 तेरे नग्मात^{१०}, तेरे हुस्न की ठडक लेकर
 मेरे तपते हुए माहौल^{११} म आ जायेंगे
 चन्द घडियो के लिए हो कि हमेशा के लिए
 मेरी जागी हुई रातो को सुला जायेंगे

१ स्तर पर २ नैन नक्श ३ चाल की लचक ४ शरीर ५ सुबह
 ६ दशन ७ प्रत्येक क्षण ८ सुगंधित ९ बहार के प्रारण १० गीत
 ११ वातावरण

गजल

हर कदम मरहला-ए-दारी-मलीब^१ आज भी है
जो कभी था वही इसा का नसीब आज भी है

जगमगाते हैं उफर पार^२ सिनारे लोकन
राम्ता मजिले हस्ती का मुठीब^३ आज भी है

मरे-मकतल^४ जिहे जाना था वो जा भी पहुँचे
मरे भिन्नर^५ कोई मोहतात^६ खतीब^७ आज भी है

अहले-दानिश न^८ जिमे अमर-ए-मुमल्लम^९ माना
अहले दिल के लिए वो बात अजीब आज भी है

वो तेरी याद है या मेरी अजोयत - कोशी^{१०}
एक नश्तर-मा रगे जा के^{११} करीब आज भी है

कौन जाने ये तेरा शायरे-आशुफता-मिजाज^{१२}
कितने मगरूर खुदाओ का रकीब^{१३} आज भी है

१ फासियो की कठिन मजिल २ क्षितिज पार ३ भयानक ४ बघ
स्वन म ५ चबूतरे पर ६ सावधान (चालाक) ७ उपदेशक ८ बुद्धि
जीवियो ने ९ अकाट्य सिद्धांत १० कष्ट प्रियता ११ ग्राह रग के
१२ खिन्न स्वभाव वाला शायर १३ प्रतिद्वन्दी

वफादारी

खूने-जमहूर^१ में भीगे हुए परचम^२ लेकर
मुझसे अफराद^३ की शाही ने वफा मागी है
सुबह के नूर पे^४ ताम्रज्वीर^५ लगाने के लिए,
शव की^६ सगीन^७ सियाही ने वफा मागी है

श्रीर ये चाहा है कि मैं काफला-ए-आदम को^८
टोकने वाली निगाहो का मददगार बनू
जिस तमब्वुर से^९ चिरागा^{१०} है सरे-जादा-ए-जीस्त^{११}
उस तसब्वुर की हजीमत का^{१२} गुनहगार बनू

जुलम-पर्वदा^{१३} कवानीन^{१४} के ऐवानो से^{१५}
वेडिया तकती है जजीर सदा^{१६} देती है
ताके-तादोव से^{१७} इन्साफ के बुत घूरते हैं
मसनदे - अदुल^{१८} से शमशीर सदा देती है

लेकिन ऐ अजमते - इन्सा के^{१९} सुनहरे ख्वाबो
में किसी ताज की सतवत का^{२०} परस्तार^{२१} नहीं
मेरे अफकार का^{२२} उनवाने-इरादत^{२३} तुम हो
मैं तुम्हारा हू—खुटेरो का वफादार नहीं

१ जनता के लहू में २ झंडे ३ व्यक्तियों की (व्यक्तिगत) ४ प्रकाश
पर ५ सजा ६ रात की ७ कडी, भयंकर ८ इसानियत के काफले को
९ कल्पना से १० प्रकाश ११ जीवन रूपी राह पर १२ पराजय का
१३ अत्याचार के पाले हुए १४ कानूनो ने १५ महलों से १६ आवाज
१७ शिक्षा के ताकचे से १८ पाय के सिंहासन से १९ मानव की महानता के
२० दबदबे या धाक का २१ उपासक २२ काव्य का २३ वास्तविक दीपक

अजनबी बन जायें

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जायें हम दोनो

न मैं तुमसे कोई उम्मीद रखू दिल-नवाजी की
न तुम मेरी तरफ देखो गलत-अदाज^१ नजरो से
न मेरे दिल की धडकन लडखडाए मेरी बातो मे
न जाहिर हो तुम्हारी कश्मकश का राज नजरो से

तुम्हे भी कोई उलभन रोकती है पेश कदमी से^२
मुझे भी लोग कहते हैं कि ये जल्वे पराए हैं
मेरे हमराह भी रुसवाइया है मेरे माजी की^३
तुम्हारे साथ भी गुजरी हुई रातो के साए हैं

तआरुफ^४ रोग हो जाये तो उसको भूलना बेहतर
तअरलुक^५ बोझ बन जाये तो उसको तोडना अच्छा
वो अफसाना जिसे तकमील तक^६ लाना न हो मुमकिन
उसे इक खूबसूरत मोड देकर छोडना अच्छा

चलो इक बार फिर से अजनबी बन जायें हम दोनो

१ भ्रमात्पादक २ भाग बढ़ने से ३ अतीत की ४ परिचय
५ सम्बन्ध ६ पूर्ति तक

मेरे ग्रहद* के हसीनो !

वो सितारे जिन की सातिर कई बेकरार सदिया
मेरी तीरा-बस्त^१ दुनिया म सितारावार^२ जागी
वभी रिफअतो पे^३ लपकी कभी बुमअतो से^४ उलभी
कभी मोगवार^५ सोई कभी नग्मावार^६ जागी

वो बुलद - दाम^७ तारे वो फलक मुकाम^८ तारे
जो निशान देके अपना रहे बेगिशा हमेशा
वो हसी, वो नूरजादे^९ वो खला के^{१०} शाहजादे
जो हमारी किस्मतो पर रहे हुक्मरा हमेशा

जिन्ह मुजमहिल^{११} दिलो ने अरव'दी^{१२} पनाह जाना
थके-हारे काफलो ने जिन्हे खिच्चे-राह^{१३} जाना
जिन्हे आगिको ने चाहा कि फलक से तोड लायें
किसी राह में विछाये किसी सेज पर सजाय

जिन्हे कममिनो से^{१४} चाहा कि लपक के प्यार करलें
जिन्हे महवशो ने^{१५} मांगा कि गले का हार करलें
जिन्हे बुतगरो ने^{१६} चाहा कि सनम^{१७} बनाके पूजें
ये जो दूर के हमी है इन्ह पास लाके पजें

* युग के

१ अघकार पूण २ सितारो की तरह ३ ऊचाइया पर
४ विशालताओ से ५ निराश, खिन्न ६ गीत गाती हुई (आशापूण)
७ ऊचे स्वान वाले ८ आकाश वासी ९ प्रकाश पुत्र १० (विशाल)
छूय के ११ निडाल १२ स्वायी १३ पय प्रदशक १४ अबोध
बालको ने १५ बाद जैसी सुन्दरिया ने १६ मूर्तिकारो ने १७ मूर्तिया

जिहे मुतरिवो ने^१ मागा कि सदाओ म^२ पिरो लें
जिन्हे शायरा ने चाहा कि खयाल मे समो लें
जो हमारी दस्तरस से^३ रहे दूर-दूर अब तक
हमे देखते रहे हैं जो ब-सद-गरूर^४ अब तक

मेरे अहद के हसीनो वो नजर - नवाज^५ तारे
मेरा दीरे-इस्क - पर्वर^६ तुम्हे नजर^७ दे रहा है
वो जुनूं^८ जो आबो-आतिश को^९ 'असीर'^{१०} कर चुका था
वो खला की^{११} बुरसअतो से^{१२} भी खिराज ले रहा है

मेरे साथ रहने वालो मेरे वाद आने वालो
मेरे दौर का ये तोहफा तुम्हे साजगार आए
कभी तुम खला से गुजरो किसी सीमतन की^{१३} खातिर
कभी तुमको दिल म रख कर कोई गुल-अजार^{१४} आए

(जनवरी, १९५६)



१ गायकी ने २ आवाजो म ३ पहुच से ४ अत्यन्त घमड के साथ
५ मनोरम ६ प्रेम पालक युग ७ भेंट ८ उमाद ९ पानी और भाग
को १० बंदी या बस में ११ शूय की १२ विशालताओं से
१३ रजत-बदन (प्रेयसी) १४ पुष्प-वण (प्रेमी)

परछाइयां

जवान रात के सीने पे दूधिया आचल
मचल रहा है किमी ख्वाबे-मरमरी की^१ तरह
हसीन फूल, हसी पत्तिया, हसी शाखें
लचक रही हैं किसी जिस्मे-नाजनी की^२ तरह
फजा म घुल से गये है उफक के^३ नम खुतूत^४
जमी हसीन है, रवाबो की सरजमी की तरह

तसव्वुरात की^५ परछाइयाँ उभरती है

कभी गुमान^६ की सूरत कभी यकी की तरह
वो पेछ जिन के तले हम पनाह लेते थे
खडे है आज भी साबित^७ किसी अमी की तरह

इन्ही के साये मे फिर आज दो धडकते दिल
खमोश होटो से कुछ कहने सुनने आये हैं
न जाने कितनी कशाकश से^८, कितनी काविश से^९°
ये भोते - जागते लम्हे चुराके लाये हैं

यही फजा थी, यही रत, यही जमाना था
यही से हमने मुहब्बत की इन्विदा की^{१०} थी
धडकते दिल से, लरजती हुई निगाहो से
हुजूरे-गैव मे^{११} नन्ही सी इत्तिजा की थी

कि आरजू के कवल खिल के फूल हो जायें
दिलो नजर की दुआये कबूल हो जायें

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है

१ मरमर ऐमे (सुदर) सपने की २ सुदरी के बदन की ३ क्षितिज
के ४ रेखायें, नैन नवश ५ कल्पना की ६ भ्रम ७ छुपचाप ८ साक्षी
९, १० प्रयत्न से ११ प्रारम्भ १२ भगवान की सेवा म

तुम आ रही हो जमाने की आख से बचकर
 नजर भुकाये हुए और बदन चुगाये हुए
 खुद अपने कदमों की आहट से भँपती, डरती,
 खुद अपने साये की जुबिश से खीफ खाए हुए

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं
 रवा है छोटी सी कश्ती हवाओं के रख पर
 नदी के साज पे मल्लाह गीत गाता है
 तुम्हारा जिस्म हर इक लहर के भँकोले से
 मेरी खुली हुई बाहों में भूल जाता है
 तसव्वुरात की परछाइया उभरती है

मे फूल टाक रहा हूँ तुम्हारे जूड़े में
 तुम्हारी आख मसरत से भुक्ती जाती है
 न जाने आज मैं क्या बात कहने वाला हूँ
 जवान खुश्क है आवाज रुकती जाती है

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

मेरे गले में तुम्हारी गुदाज^१ बाह है
 तुम्हारे होठों पे मेरे लबों के साये है
 मुझे यकी है कि हम अब कभी न विछड़ेंगे
 तुम्हें गुमान है कि हम मिलके भी पराये हैं ।

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

मेरे पलंग पे बिखरी हुई कितायों को,
 अदाए - अज्जो-करम से^२ उठा रही हो तुम
 मुहाग-रात जो ढोलक पे गाये जाते हैं,
 दवे सुरों में वही गीत गा रही हो तुम

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

१ मुडोल २ दिनय और वृषा की अदा से

वो लम्हे कितने दिलकश थे वो षडिया कितनी प्यारी थी,
वो सेहरे कितने नाजुक थे वो लडिया कितनी प्यारी थी
वस्ती की हर-इत 'गादाव गली' स्वार्थों का जजीरा^२ थी गोया
हर मौजे नफस^३, हर मौजे सवा^४, नगमों का जखीरा^५ थी गोया

नागाह^६ लहवते रेतों से टापो की सदायें आने लगी
बारूद की वोभन बू लेकर पच्छिम से हवायें आने लगी
तामीर के^७ रीशन चेहरे पर तखरीब का^८ बादल फैल गया
हर गाव में वहशत^९ नाच उठी, हर शहर में जगल फैल गया
मगरिव के मुहफजब मुल्का से कुध खाकी - बर्दी - पोश आये
इठलाते हुए मगरूर आये, लहराते हुए मदहोश आये
सामोश जमी के सीने में सैमों की तनावें गडने लगी
मखन सी मुलायम राहों पर बूटों की खराश पडने लगी
फौजों के भयानक वैड तले चर्खों की सदायें डूब गईं
जीपों की सुलगती धूल तले फूलों की कवायें^{१०} डूब गईं

इन्सान की कीमत गिरने लगी, अजनास के^{११} भाग्यो चडने लगे
चौपाल की रीतक घटने लगी, भरती के दफातर^{१२} बढने लगे
वस्ती के सजीले शोख जवा, बन-बन के सिपाही जाने लगे
जिस राह से कम ही लौट सके, उस राह पर राही जाने लगे

इन जाने वाले दस्तों में गैरत भी गई, दरनाई^{१३} भी
माथों के जवा बटे भी गये, बहनों के चहेते भाई भी

वस्ती पे उदासी छाने लगी, मेलों की बहारे खत्म हुईं
आमों की लचकती शाखों से भूलों की कतारें खत्म हुईं

१ आनन्द दायक गली २ स्वप्नों का टापू ३ द्वास ४ हवा की लहर
५ भण्डार ६ अक्स्मात ७ निर्माण ८ ध्वंस का ९ बबरता १० आवरण
११ अनाजों के १२ दफतर १३ जवानी

धूल उडने लगी बाजारो मे, भूरा उगने लगी खलियानो मे
हर चीज दुकानो से उठकर, रूपोश हुई तहखानो में

बदहाल घरों की बदहाली, बढ़ते-बढ़ते जजाल बनी
महंगाई बढ़कर काल बनी, सारी बस्ती कगाल बनी

चरबाहिया रस्ता भूल गई, पनहारिया पनघट छोड़ गई
कितनी ही कँवारी श्रबलायें, मा-बाप की चौखट छोड़ गई

इफलास ज़दा दहकानो के^१ हल-बैल बिके, खलियान बिके
जीने की तमन्ना के हाथो, जीने ही के सब सामान बिके

कुछ भी न रहा जब बिकने को जिस्मो की तिजारत होने लगी
खलवत मे^२ भी जो भमनूम^३ थी वो जलवत मे^४ जसारत^५
होने लगी

तसब्बुरात की परछाइया उभरती हैं

तुम आ रही हो सरे-बाम वाल बिखराये
हजार गोना मलामत का बार उठाये हुए

हवस-परस्त^६ निगाहो की चीरा-दस्ती से^७
बदन की भेपती उरियानिया^८ छुपाए हुए

तसब्बुरात की परछाइया उभरती हैं

१ निघनता के मारे किसानो के २ एकांत मे ३ निपिद्ध ४ खुले भ्राम
५ घुटता ६ लोखुप ७ उद्ण्डता ८ नगनताएँ

मैं शहर जाके हर इक दर^१ पे भाँक आया हूँ
 किसी जगह मेरी मेहनत का मोल मिल न सका
 सितमगरो के सियासी कमारखाने मे^२,
 अलम-नसीव फिरासत^३ का मोल मिल न सका

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है

तुम्हारे घर मे कयामत का शोर बर्पा हे
 महाजे - जग से^४ हरकारा तार लाया है
 कि जिसका जिक्र तुम्हे जिन्दगी से प्यारा था
 वो भाई 'नर्गा-ए-दुश्मन'^५ म^६ काम आया है

तसव्वुरात की परछाइया उभरती है

हर एक गाम पे^७ बदनामियो का जमघट है
 हर एक मोड पे रुमवाइयो के मेले है
 न दोस्ती, न तकल्लुफ, न दिलवरी, न खुत्स^८
 किसी का कोई नही आज सब अकेले है

तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

वो रहगुजर जो मेरे दिल की तरह सूती है
 न जाने तुमको कहा ले के जाने वाली है
 तुम्ह खरीद रहे है जमीर के कातिल
 उफक पे खूने-तम-नाए-दिल की^९ लाली है

तसव्वुरात की परछाइया उभरती ह

१ दरवाजा २ बुझाखाने म ३ शोब ग्रस्त विवेक ४ युद्ध-क्षेत्र से
 ५ शत्रु के घेरे म ६ तदम पर ७ शुद्ध हृदयता ८ मनोकामना के रक्त की

सूरज के लहू मे लिथडी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख्वाबो का अजाम है अब तक याद मुझे

उम शाम मुझे मालूम हुआ, खेतो की तरह इस दुनिया म
सहमी हुई दोशीजाओ की^१ मुस्कान भी बेची जाती है
उस शाम मुझे मालूम हुआ, इस कारगहे - जरदारी मे^२
दो भोली-भाली रूहो की पहचान भी बेची जाती है

उस शाम मुझे मालूम हुआ, जब बाप की खेती छिन जाये
ममता के सुनहरे ख्वाबो की अनमोल निशानी बिकती है
उस शाम मुझे मालूम हुआ, जब भाई जग मे काम आयें
सरमाये के कहवाखाने मे^३ वहनो की जवानी बिकती है

सूरज के लहू मे लिथडी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख्वाबो का अजाम है अब तक याद मुझे

तुम आज हजारो मील यहा से दूर कही तनहाई मे,
या बजमे-तरव-आराई म^४,
मेरे सपने बुनती होगी बँठी आगोश पराई मे।

और मैं सीने मे गम लेकर दिन-रात मशकत^५ करता हूँ,
जीने की खातिर मरता हूँ,
अपने फन को रुसवा करके अगियार का^६ दामन भरता हूँ।

मजबूर हूँ मैं, मजबूर हो तुम, मजबूर ये दुनिया सारी है,
तन का दुख मन पर भारी है,
इस दौर मे^७ जीने की कीमत या दारो रसन^८ या ख्वाारी है।

१ तख्त कुमारियो की २ पूंजीवाद के कारखाने मे ३ बेश्यालय मे
४ धान-दवायक महफिल मे ५ परिश्रम ६ गरीब का ७ काल मे ८ मूली

मे दारो-रसन तक जा न सका, तुम जहद की^१ हद तक आ न सकी,
चाहा तो मगर अपना न सकी,
हम तुम दो ऐसी रूहे हैं जो मजिले - तस्की^२ पा न सकी ।

जीने को जिये जाते हैं मगर, सासो मे चिताये जलती है,
खामोश बफायें जलती हैं,
सगीन हकायक - जारो मे^३, रवावो की रिदायें^४ जलती है ।

और आज इन पेडो के नीचे फिर दो साये लहराये है,
फिर दो दिल मिलने आये हैं,
फिर भीत की आधी उट्टी है, फिर जग के बादल छाये है ।

मे सोच रहा हू इनका भी अपनी ही तरह अजाम न हो,
इनका भी जुनू^५ बदनाम न हो,
इनके भी मुकद्दर मे लिक्खी इक खून मे लिथडी शाम न हो ।

सूरज के लहू मे लिथडी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे ।
चाहत के सुनहरे ख्वाबो का अजाम है अब तक याद मुझे ॥

हमारा प्यार हवादिम की^६ ताम ला न सका,
मगर इन्हे तो मुरादो की रात मिल जाये ।
हमे तो कदमकशे-मर्गे-बेअमा^७ ही मिली,
इन्हे तो भूमती गाती हयात मिल जाये ॥

१ सयाम २ दान्ति की मजिल ३ बठोर पास्तविकताओं की भूमि
मे (समार मे) ४ पादरें ५ उमाद, प्रेम ६ दुषंटनाओं की ७ बेपनाह
मृत्यु की खीबातानी

बहुत दिनों से है ये मशगला^१ सियासत का,
कि जब जवान हो बच्चे तो रत्न हो जायें ।
बहुत दिनों से है ये राब्त^२ हुक्मरानो का,
कि दूर-दूर वे मुक्को मे कहत वो जायें ॥

बहुत दिनों से जवानी के रुमाव वीरा हैं,
बहुत दिना से मुहब्बत पनाह बूडनी है ।
बहुत दिनों से मितम-दीद शाहराहो में^३,
निगारे जोस्त^४ की इस्मत पनाह डूढती है ॥

चलो कि आज मभी पायमाल^५ रहो से,
कहे वि अपने हर-इक जरम को जवा कर लें ।
हमारा राज, हमारा नही सभी का है,
चलो कि सारे जमाने को राजदा कर लें ।

चलो कि चल के सियासी मुवामिरो से^६ कहे,
कि हम को जगो-जदल के चलन से नफरत है ।
जिसे लहू के सिवा कोई रंग रास न थाये,
हम हयात के^७ उस पैरहन से^८ नफरत है ॥

कहो कि अब कोई कातिल अगर इधर आया,
तो हर कदम पे जमी तग होती जायेगी ।
हर एक मौजे-हवा^९ रुख बदल के झपटेगी,
हर एक शाख रगे-सग^{१०} होती जायेगी ॥

१ मनोविनोद २ उमाद ३ अत्याचार पीड़ित राजपथो मे ४ जीवन
रूपी प्रेयसी ५ कुचली हुई ६ झूएबाजो से ७ जीवन के ८ लिवास
से ९ हवा की लहर १० पत्थर की रंग

मेरे गीत तुम्हारे हैं

ये कह दें,

उठो कि आज हर इक जगजू से जित^१ है ।
कि हमको काम की खातिर कलो की हथौक नही,
हम किसी की जमी छीनने का मत है ॥
हमें तो अपनी जमी पर हलो की हा

खन करे,

कहो कि अब कोई ताजिर इधर का जायेगी ।
अब इस जा^२ कोई कवारी न बेची फसलें,
ये खेत जाग पडे, उठ खडी हु^३ पायेगी ॥
अब इस जगह कोई कवारी न बेची

क की,

ये सरजमीन है गौतम की और ना^४ कभी ।
इस अर्जे-पाक पे^३ वहशी न चल सकें^५ लिए,
हमारा खून अमानत है नस्ले-नी के कभी ॥
हमारे खून प लश्कर न पल सकेगे

श रहे,

कहो कि आज भी हम सब अगर खमो नही ।
तो इस दमकते हुए खाकदा की^६ खैर रो से,
जुनू की^६ ढाली हुई एटमो बला^७ नही ॥
जमी की खैर नही आसमा की खैर

वार,

गुजस्ता^८ जग मे घर ही जले मगर इस^९ जाये ।
अजब नही कि ये तनहाइया भी जल वार,
गुजस्ता जग मे पैकर^८ जले मगर इस^९ जायें ॥
अजब नही कि ये परछाइया भी जल उ



४ नई पीढी के

बहुत दिनों से है ये मशगला^१ गियामत का,
कि जब जवान हो बच्चे तो बल्ल हो जायें ।
बहुत दिनों से है ये चान^२ हुक्मरानो का,
कि दूर-दूर के मुत्को मे बहत वो जाये ॥

बहुत दिनों से जवानी के टप्राव बीरा है,
बहुत दिना से मुहब्बत पनाह दूढनी है ।
बहुत दिनों से मिनम-दीद शाहराहा में^३ ,
निगारे-जीस्त^४ की इस्मत पनाह इढती है ॥

चलो कि आज सभी पायमाल^५ रूहो से,
बह कि अपने हर-इक जरम को जवा कर लें ।
हमारा राज, हमारा नही सभी का है,
चलो कि सारे जमाने को राजदा कर लें ।

चलो कि चल के सियासी मुकामिरो से^६ बह,
कि हम को जगो-जदल के चलन से नफरत है ।
जिसे लहू के सिवा कोई रग रास न आये,
हमे ह्यात के^७ उस पैरहन से^८ नफरत है ॥

कहो कि अब कोई कातिल अगर इधर आया,
तो हर कदम पे जमी तग होती जायेगी ।
हर एक मौजे-हवा रख बदल के भपटेगी,
हर एक शाख रगे सग^९ होती जायेगी ॥

१ मनोविनोद २ उमाद ३ अत्याचार पीडित राजपथो म ४ जीवन
रूपी प्रियसी ५ कुचली हुई ६ झूएबाजो से ७ जीवन के ८ लिबास
से ९ हवा की लहर १० पत्थर की रग

उठो कि आज हर इक जगजू से ये कह दें,
कि हमको काम की खातिर कलो की हाजत^१ है।
हमें किसी की जमी छीनने का शौक नहीं,
हमें तो अपनी जमी पर हलो की हाजत है ॥

कहो कि अब कोई ताजिर इधर का रुख न करे,
अब इस जा^२ कोई कवारी न देची जायेगी।
ये खेत जाग पडे, उठ खड़ी हुई फसलें,
अब इस जगह कोई कवारी न देची जायेगी ॥

ये सरजमीन है गौतम की और नानक की,
इस अर्ज-पाक पे^३ वहशी न चल सकेंगे कभी।
हमारा खून अमानत है नस्ले-नी के^४ लिए,
हमारे खून पे लश्कर न पल सकेंगे कभी ॥

कहो कि आज भी हम सब अगर खमोश रहे,
तो इस दमकते हुए खाकदा की^५ खैर नहीं।
जुनू की^६ ढाली हुई एटमो बलाओ से,
जमी की खैर नहीं आसमा की खैर नहीं ॥

गुजस्ता^७ जग मे घर ही जले मगर इस वार,
अजब नहीं कि ये तनहाइया भी जल जायें।
गुजस्ता जग म पैकर^८ जले मगर इस वार,
अजब नहीं कि ये परछाइया भी जल जायें ॥



१ आवश्यकता २ जगह ३ पवित्र भूमि पर ४ नई पीढी के
५ धरती की ६ जमाद की ७ पिछली ८ शरीर

